पेरकी समाज

स्मरणिका २०२४

महिला उद्यमिता विशेषांक

• संकलनकर्ता •

प्रकाश पारो गणपतराव गोविंदवार

ॲडमिन - पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप

प्रकाशक

पेरकी समाज उद्योजिका प्रकाशन

प्लॉट नं. 96, मिलींद नगर, बालाभाऊपेठ, नागपूर - 440017.

www.climatecooler.in

पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप से जुड़े हुए व्यवसायी

BUSINESS PROMOTION GROUP

टिक टॉक चाय

Parlour Franchise Business

तिरंगा स्क्वेयर, सक्करदरा, नागपूर.

अमृततुल्य चाय पार्लर फ्रेन्चाईसी बिजनेस द्वारा 14 से ज्यादा स्थानों पर चाय पार्लर प्रोप्रा.दिपक मधुकर अंगलवार द्वारा शुरू किया गया है।

चाय पार्लर फ्रेन्चाईसी के लिये संपर्क करे

मो. 8208463507

प्रोप्रा. दिपक मधुकर अंगलवार

अपनी फ्रेंचाइजी शुरु करें

फ्रैंचाइजी मॉडेल	स्थापित करना
मिनी	2,00,000/-
मेझरे	5,50,000/-
प्रिमियम	10,00,000/-

14+ आउटलेट्स   3+ शहर   90+ प्रोडक्ट

फायनांस उपलब्ध है, संपर्क करें।

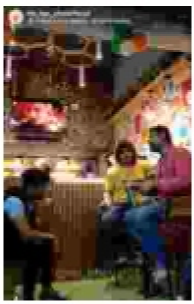

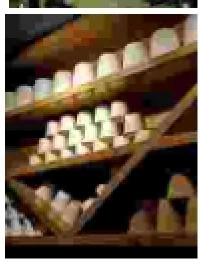

पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप से जुड़े हुए व्यवसायी

BUSINESS PROMOTION GROUP

डॉ.मोरेश्वर डी. पेट्टेवार
बी.ए.एम.एस. (नाग.)

डॉ.किरण मो. पेट्टेवार
बी.ए.एम.एस., एम.डी (अ.मेडी.)

डॉ.मोनिका कि. पेट्टेवार
बी.ए.एम.एस., सी.जी.ओ. (नाडी रोगतज्ञ)

जानकी नगर, महावीर किराना समोर, उदय नगर, नागपूर. मो. 8830782795

श्री साई संगम अर्थमूव्हर्स

आमच्याकडे सर्व प्रकार चे पोकलॅन्ड,
जे सी बी मशीन, फ्रंन्ट ब्लेड ट्रॅक्टर,
डंम्पीग ट्रॉली उपलब्ध आहे
तसेच सर्व प्रकार चे लेव्हलींग,
शेत तळे, वन तळे खोद काम
माफक दरात करून मिळेल

आमचा पत्ता – श्रीराम स्टोन क्रशर, पांढरकवडा

प्रोप्रा. प्रविण श्रीराम महाजन (बूध्देवार)

संपर्क नं – 9011741636

संपूर्ण महाराष्ट्र, तेलंगाना, मध्यप्रदेश सेवा मिळेल

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले,
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा

मानव जन्मात दोन प्रकारचे लोक येतात.
काहीं चांगलें करून नावे करतात. लोक त्यांना आठवतात.

दुसरे, अज्ञाताच्या अंधारात असंख्य लोक मरतात.
तुम्ही करोडपती, अब्जाधीश किंवा पदाअधिकारी ,
नेता असलात तरीही रस्त्यावरचा कुत्राही तुम्हाला ओळखत नाही.

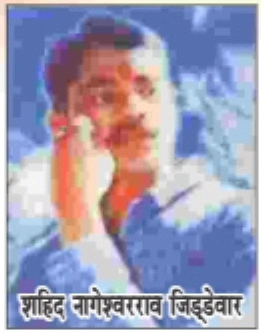

मानव जन्मात दोन प्रकारचे लोक येतात. खूप नावे कमवतात. चागलें काम करतात. लोक त्याला आठवतात. त्यापैकीच एक म्हणजे पांढरकवडा येथील अमर हुतात्मा नागेश्वर विठ्ठलराव जिद्देवार. जो सीमेवर गोळ्या खावून देशासाठी शहीद झाला.

त्याच पांढरकवडा स्मशानभूमीत त्यांचे छोटेसे पण सुंदर स्मारक बांधले आहे. ज्या ठिकाणी त्यांचे अंत्यसंस्कार करण्यात आले. त्यांचा जन्म 1967 मध्ये झाला आणि 24/1/1992 रोजी मृत्यू झाला. आज तो जिवंत असता तर तो माझ्या वयाचा, 57 वर्षांचा असता. 32 वर्षांपूर्वी देशसेवेत ते शहीद झाले. त्यांचे दुसरे स्मारकही पंचायत भवनात बांधले आहे. खुल्या सभागृहाला अमर शहीद नागेश्वर विठ्ठलराव जिद्देवार यांचे नाव देण्यात आले आहे.

पेरकी समाजाच्या दोन्ही लोकांचे स्मारक होण्याचे कारण देखील पदाधिकारी आणि समाज सेवक श्री मदन जी जिडेवार यांच्या काळात समाजाच्या संघटित प्रयत्नांमुळे आहे. त्यामुळे हुतात्मा नागेश्वर विठ्ठलराव जिद्देवार यांचे स्मारक बांधण्यात आले. त्यामुळे पेरकी समाजाने एकत्र येऊन काम करणे गरजेचे आहे.

पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप देश के सभी शहिदों को अभिवादन करता है।

विनम्र आदरांजली अर्पित करता है

पेरकी समाज स्मरणिका २०२४

प्रकाशक
पेरकी समाज उद्योजिका प्रकाशन
प्लॉट नं. 96, मिलींद नगर,
बालाभाऊपेठ, नागपूर - 440017.

संकलनकर्ता
प्रकाश गणपतराव गोविंदवार
प्लॉट नं. 96, मिलींद नगर,
बालाभाऊपेठ, नागपूर - 440017.
मो. 9096170712

द्वितीय आवृत्ती
1000 प्रतियां
10 नवंबर 2024

मुद्रक
पंचशील ग्राफीक्स
137, मिलींद नगर, बालाभाऊपेठ,
नागपूर - 17. मो. 9822728026

किंमत
रूपये 100/-

व्यक्तिगत वितरण के लिये
संपादकीय अधिकार सुरक्षित है।
विज्ञापन निःशुल्क है।

अनुक्रमणिका

प्रकरण 1 : संपादकीय प्रस्तावना 5
प्रकरण 2 : महिला उद्योजिका चा यशस्वी प्रवास 7
प्रकरण 3 : एक आदर्श महिला किसान की कहानी 8
प्रकरण 4 : पेरकी समाज की महिला उद्यमियों का लेखा-जोखा 10
प्रकरण 5 : कानून कायदे 20
प्रकरण 6 : व्यवसाय 21
प्रकरण 7 : व्यवसाय म्हणजे काय 24
प्रकरण 8 : इंजिनियरिंग क्षेत्रातील रोजगार उपलब्धता : 26
प्रकरण 9 : समाजातील एकता 27
प्रकरण 10 : अध्यात्म 28
प्रकरण 11 : झाड़ी पट्टीचा पेरकी समाज . 29
प्रकरण 12 : राष्ट्रपति पोलिस पदक विजेता 30
प्रकरण 13 : पेरकींना भटक्या जमातीत स्थान 31
प्रकरण 14 : पेरकी समाज : काल आणि आज - या ग्रन्थाच्या अंतरंगात ... 34
प्रकरण 15 : पेरक्यांचे गोत्र 43

प्रस्तावना

द्वारा : **प्रकाश पारो गणपतराव गोविन्दवार**, नागपुर
ग्रुप एडमिन - पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप

नुसता स्वतःच्या प्रगतीचा वेग साधने म्हणजे प्रगति नव्हे..... स्वतः सोबत समाजचं हित साध्य करणे म्हणजे....खरी प्रगति होय. एका महापुरुषचा कथन. खुद की प्रगति यानी प्रगति नहीं है। अपने प्रगति के साथ दूसरों की प्रगति में सहायक बनना ही सच्ची प्रगति है।

एक मेकांना सहाय करू... अवघे धरू सुपंथ।

प्रिय पेरकी समाज बंधुओं, नमस्कार।

इस साल की वार्षिक पत्रिका का मुख्य विषय महिला उद्‌यमिता है। पेरकी समाज की महिला वर्ग की व्यवसाई और दुकानदारों का परिचय देना है। इसमें मुख्य रूप से इतिहास और वर्तमान में कार्यरत व्यवसाई महिलाओं के बारे में बताया गया है।

पारो गणपतराव गोविन्दवार

महिला उधमिता विशेषांक निकालने की मुख्य वजह मेरी मां पारों गणपतराव गोविन्दवार, नागपुर है। पिछले वर्ष उनका देहांत हुआ है। बहुत से लोगों को पता है कि मेरी मां सतर और अस्सी के दशक में सौ कामगारों से भरा संतरजी कारखाने का संचालन करती थी। हिसाब-किताब रखती थी। करीब बीस-पच्चीस साल उसने कठोर मेहनत और लगन से यह संतरजी कारखाना चलाया था। हमारे नज़र में वह महिला उद्‌यमी है। उसने मेरे पिता के व्यवसाय में हाथ बंटाया था। मेरे पिता श्री गणपतराव महादेव गोविंदवार को संतरजी वाले गोविंदवार के नाम की पहचान बनाने में मदद की थी। व्यस्त होने के बावजूद भी शादियों में और अन्य पेरकी समाज के सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती थी। मेरे पिता श्री गणपतराव महादेव गोविंदवार भी पेरकी जनसंघम संगठन में स्थापना के समय सक्रिय थे। कारण पेरकी जनसंघम संगठन के पहले अध्यक्ष श्री पेंटेय्या दोरसेटवार जी मेरे पिता के संगे मौसा थे।

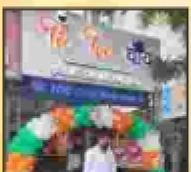

श्री दिपक मधुकर अंगलवार

इस साल की पेरकी समाज स्मरणिका २०२४ महिला उद्‌यमियों को समर्पित है। महिला व्यवसाई और दुकानदारों की जानकारी देने की कोशिश की गई है।

आज़ के आधुनिक युग में स्टार्टअप की धूम मची है। स्टार्टअप ने दुनिया को बदल कर रख दिया है। जीवन को आसान बनाया है। उत्साही युवा नया कुछ सोच रहा है। नया कुछ कर रहा है। इसमें भी पेरकी समाज का युवा वर्ग आगे है। इनमें से मैंने चार काबिल, होनहार और मेहनती पेरकी समाज के युवकों का चुनाव किया है। उनके उपक्रमों की जानकारी इस पत्रिका की प्रस्तावना में देना जरूरी समझा है। ताकि पेरकी समाज का युवा वर्ग उनसे प्रेरणा प्राप्त कर सकें ! इसमें सबसे पहला नंबर पेरकी समाज के एक युवक का है। जिसने मात्र चार साल में एक बड़ा बिजनेस खड़ा करने में सफलता पाई है। नागपुर शहर और बाहर पंद्रह टीक टाक अमृत तुल्य चाय फ्रेंचाइजी की दुकानें शुरू करने में सफलता पाई है। उनका नाम है श्री दिपक मधुकर अंगलवार है। जो आरमोरी तहसील के है। एक छोटे से गांव के खेत मजदूर के बेटे है। वे इंजिनियरिंग बी ई पास ग्रेजुएट है। आप में से कोई टीक टाक अमृत तुल्य चाय फ्रेंचाइजी लेना चाहें तो उनसे जरूर संपर्क करें। पेरकी समाज के युवा वर्ग को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप उनकी सफलता की कामना करता है और आर्थिक उन्नति की शुभकामनाएं देता है।

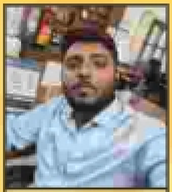

श्री तिलक विठ्ठलराव पैंडलेवार

पेरकी समाज के दूसरे होनहार युवक छत्तीसगढ़ के भिलाई शहर निवासी है। उनका नाम श्री तिलक विठ्ठलराव पैंडलेवार है। वे एक हुनरमंद सिविल इंजीनियर और आर्केटेक्ट डिज़ाइनर है। बहुत कम समय में उन्होंने भिलाई शहर में घरों की डिजाइन बनाने के काम में नाम कमाया है। बंगले और डुप्लेक्स की डिजाइन बनाने में उन्हें महारत हासिल है। वे बगीचे के लिए लैंड स्केप भी डिजाइन करते है। घर की डिजाइन के थ्री डी विडियो बनाकर देने है। वह भी पूरी कास्ट, कीमत ,प्लानिंग के साथ। वे बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन का भी काम करते है। मटेरियल के साथ घर बनाने का काम ठेके पर लेते है। बहुत ही मेहनती और अपने काम के प्रति समर्पित व्यक्ति है। आप अगर नया घर बनाना चाहते हैं तो उनसे डिजाइन बनाने के लिए जरूर संपर्क करें। पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप को उनसे बहुत उम्मीद है। वे सिविल इंजीनियर के क्षेत्र में नाम कमाएं ! इन्हीं शुभकामनाओं के साथ आशिर्वाद और अभिनंदन !

श्री ध्रुव बलवंतराव पैंडलेवार

तीसरे नंबर के युवा विद्यार्थी गोंदिया शहर निवासी है। उनका नाम कुमार ध्रुव बलवंतराव पैंडलेवार है। पढ़ाई करते हुए उन्होंने भविष्य की प्लानिंग कर ली है। उनके ख्वाब बहुत ही ऊंचे है। उनकी योजना पैन इंडिया के लिए आनलाइन कम्प्यूटर एज्युकेशन प्रोवाइड बनने की है। सस्ते में युवा वर्ग को घर बैठे कम्प्यूटर एज्युकेशन देने का है। इसके लिए उन्होंने अपनी कंपनी को स्टार्टअप इंडिया में रजिस्ट्रेशन कराया है। उनकी कंपनी का नाम मोटीवमार्ट टेलेंट हब प्रायवेट लिमिटेड है। इसके अलावा भी दो कंपनियां है । उनका नाम द्वारका फेस्टिवल्स , राधे कृष्ण एकेडमी है। पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप उनके स्वर्णिम भविष्य की सफलता की कामना करता है।

सबसे अंत में एक दृष्टि बाधित उत्साही पेरकी समाज के एक युवा उधमी व्यवसाई की कहानी। उनकी कहानी पेरकी समाज के लिए प्रेरणादायक है। वे भंडारा शहर निवासी श्री अक्षय बातुलवार जी है। वे स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में नौकरी करते है। साथ ही में दृष्टि हीन लोगों का आर्केस्ट्रा भी चलाते है। भजन - कीर्तन और माता के जागरण के कार्यक्रम भी करते है। आर्केस्ट्रा उनका व्यवसाय है। इस तरह से वे दृष्टि हीन लोगों को रोजगार देकर सेवा का भी काम कर रहे है। पुण्य अर्जित करने का काम कर रहे है। उनकी भी कहानी संघर्षों से भरी है। दृष्टी बाधित होते हुए भी उन्होंने अपने जीवन में काबिले-तारीफ उपलब्धियां हासिल की है।पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप उनके सफलता की कामना करते हुए उन्हें आगे बढ़ने की शुभकामनाएं देता है।

श्री अक्षय गंगाधरजी बातुलवार

प्रिय पेरकी बंधूओं , पिछले साल के तुलना में इस साल दुगुनी साहित्यिक सामग्री देने की कोशिश की गई है। सबसे महत्वपूर्ण पेरकी समाज के लोगों के गोत्र की जानकारी दी गई है। हम में से अनेक लोगों को उनके गोत्र की जानकारी नहीं है। जिसका उपयोग यज्ञ हवन, सत्य नारायण की पुजा करते समय होता है। इस किताब का प्रकाशन विज्ञापन दाताओं की मदद से संभव हुआ है। कुछ अच्छे लेखकों की मदद से संभव हुआ है। इन सभी विज्ञापन दाताओं और लेखकों का बहुत बहुत धन्यवाद , शुक्रिया और आभार व्यक्त करता हूं मैं ! इस पत्रिका के माध्यम से पेरकी समाज संबंधित साहित्य का प्रकाशन करके पेरकी समाज को जोड़ने और जानकार बनाने की कोशिश की गई है। फिर भी बहुत कुछ छूट जाता है । सभी को स्थान देना संभव नहीं होता है। जाने अंजाने में कुछ गलतियां भी हो जाती है। आशा करते है कि आप उदार मन से मुझे क्षमा करेंगे।

सबसे अंत पेरकी समाज के व्यापारी व्यवसाई और दुकानदारों और उद्योगपतियों से कहना है कि ...... सुगंध को अपना साथी बनाईएं ! सुगंध बिखेरते रहिएं ! ! राग द्वेष की राजनीति से दूर रहिएं ! ! !और सबसे जरूरी समाज उपयोगी कार्यों में हाथ बंटाते रहें और समाज से सम्मान पाएं ! !

एलआयसी एजंट ते महिला सक्षमीकरणाची धुरा वाहणारी उद्योजिका : यशस्वी प्रवास

जीवन बीमा निगम ची स्टार परफार्म ऑफ गढ़चिरोली

श्रीमती आशा राजेन्द्र तामशेट्टीवार ला पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप तर्फे शुभेच्छा आणि अभिनंदन.

M. 8379866235

मे 2019 मध्ये एका निश्चयी महिलेने एलआयसी एजंट म्हणून आपला प्रवास सुरू केला, एक असा मार्ग जो तिच्या समाजातील महिलांसाठी पारंपारिक नसलेला मानला जातो. सुरुवातीला एका साध्या एजंटपासून सुरुवात करत, तिने सतत मेहनत केली, कौशल्ये सुधारली, प्रशिक्षण सत्रांना हजेरी लावली आणि उच्च अधिकाऱ्यांकडून मार्गदर्शन घेतले. अडथळयांमधून वाट काढत तिने असे लक्षवेधी टप्पे गाठले जे आधी दूर असल्यासारखे भासले.

तिच्या समर्पणामुळे तिला एमडीआरटी अमेरिका पुरस्कार प्राप्त एजंट, सीएलआयए, नागपूर विभाग महिला प्रतिनिधी आणि महिला श्रेणीत शाखा लाईफ इन्शुरन्स एजंट असोसिएशन मंडळ महीला सक्षमीकरण समिती सदस्य नागपूर प्रतिष्ठित पदव्या मिळाल्या. ती शाखेतील क्रमांक 1 एजंट बनली नाही, तर इतर महिलांसाठी चिकाटी आणि तिच्या स्वतःच्या कार्यालयात सजवलेले तिचे ट्रॉफी मेडल हे तिच्या यशाची गाथा सांगत आहे

तिचा हा चार वर्षाच्या प्रवास मात्र एकट्याचा नव्हता. तिचे पती नेहमीच तिच्या सोबत होते, तिचे पहिले ग्राहक बनून आणि तिला सातत्याने आधार देऊन त्यांनी तिच्या यशात महत्त्वपूर्ण भूमिका बजावली. तिचे मुल वाढत्या व्यवसायाचे व्यवस्थापन करण्यात मदत करत होता, आणि सासरची मंडळी सुरुवातीपासूनच तिला प्रेरणा देत होती. या पाठिंब्यामुळे तिला पुरुषप्रधान जगात स्वतःला सिद्ध करण्याची आणि कौटुंबिक आणि व्यावसायिक जीवनाचा समतोल साधण्याची संधी मिळाली.

आज, यशस्वी एलआयसी एजंट म्हणून कार्यरत नाही, तर ग्रामीण भागातील महिलांना रोजगार उपलब्ध करून देत एक व्यवसाय चालवते, ज्यामुळे महिलांचे सक्षमीकरण होते. तिची कहाणी चिकाटी, कौटुंबिक पाठिंबा आणि व्यवसायाच्या जगात अडथळे पार करण्याच्या शक्तीचे सजीव उदाहरण आहे.

भारतातीलच नवे तर पर प्रांतात पण पॉलिसी काळण्यात यश मिळवले.

तिचा हा चार वर्षाचा प्रवास असंख्य महिलांना त्यांची स्वप्ने पूर्ण करण्यासाठी प्रेरणा देतो, हे दाखवून देते की कठोर परिश्रम आणि योग्य पाठिंब्याने कोणतेही ध्येय गाठणे अशक्य नाही.

पेरका सावंगी गांव की आशक्काबाई गोविंदवार एक अमीर आदर्श किसान कृषक महिला थी ।

लेखक - प्रकाश पारो गणपतराव गोविन्दवार, नागपुर

श्रीमती आशक्काबाई गोविंदवार यवतमाल जिले की अंग्रेजों के समय की एक अमीर जमीनदार महिला थी। उसकी मदद से पेरकी समाज के लोगों द्वारा विकसित एक मात्र तीर्थ स्थान थाटेश्वर तीर्थ धाम, वर्धा यवतमाल रोड़, वर्धा में स्थित है।

पेरका सावंगी गांव और गोविन्दवार परिवार को नाम कमाकर देने वाली एक मात्र महिला आशक्काबाई गोविंदवार है। ऐसा कहना था पेरकी जनसंघम संगठन के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री मारोतराव बुरेवार पाटील का।

उनके कार्यकाल में यवतमाल के रालेगांव के सांवगी पेरका गांव में चौथा अधिवेशन 20 मे 1983 में संपन्न हुआ था। यह बात उन्होंने उसकी यादें ताजा करते हुए कहा था।

उस अधिवेशन का खर्च एक अकेली महिला श्रीमती आशक्काबाई शिवराम सावकार गोविंदवार ने उठाया था। इसी वजह उस अधिवेशन का आयोजन सावंगी पेरका गांव, रालेगांव में हुआ था। तत्कालीन वन मंत्री श्री नानाभाऊ एंबडवार और मंत्री श्री जवाहर दर्डा दोनों उपस्थित थे। इस अधिवेशन की अध्यक्षता एम एल सी श्री लिंगण्णा पुजारी ने की थी। उस अधिवेशन में मेरे पिता श्री गणपतराव महादेव गोविंदवार ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज की थी।

मेरी ससुराल वांजरी पाढ़रकवड़ा की है। मेरे ससुर श्री अरूण अक्कलवार जी के श्री मारोतराव बुरेवार पाटील जंवाई या बड़े जीजा लगते है। मेरी वांजरी गांव के उनके चिरेबंदी वाड़े पर संत साहित्य और पेरकी समाज पर अनेक बार चर्चा होती थी।

उन्होंने ही बताया था कि पेरका सावंगी की श्री नागोराव हनुंमतराव गोविंदवार की बहन बहनाबाई वांजरी में बुरेवार परिवार में ब्याही गई थी।

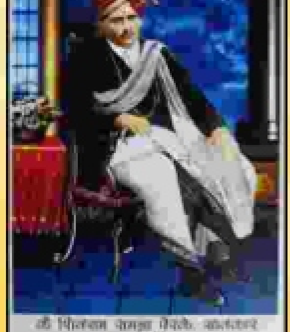

वह एक बड़ा जमीनदार परिवार था। वांजरी गांव में बड़ी खेती थी। वह श्री चंद्रशेखर बुरेवार की मां थी। वह अपने पति के मृत्यु के बाद अकेले एक बहुत बड़ी खेती संभाली थी। खेती किसानी करने वाली इतनी मेहनती, कार्य कुशल महिला उन्होंने अपने जीवन में नहीं देखी थी।

उसी गोविंदवार परिवार की आशक्काबाई सावकारीन पेरका सावंगी और दूसरे गांवों की खेती आठ दस मुंशी मुनिमों के भरोसे संभालती थी। खेती से वह खूब धन कमाती थी। उसका एक बड़ा भाग वह दान धर्म में खर्च करती थी। इस वजह से उसका पेरकी समाज में बहुत नाम था।

वह हमेशा धार्मिक आयोजन पेरका सावंगी

रालेगांव में करती रहती थी। गांव को उसने तीर्थ स्थल बना दिया था। उनके घर पर संत महात्माओं का बसेरा रहता था। सुप्रसिद्ध कीर्तन केसरी भाऊसाहेब शेवाड़कर जैसे प्रवचनकार उनके तीन मंजिला महल जैसे घर पर प्रवचन देने आते रहते थे। घर भोजन भंडारा शूरू रहता था। लोगों के चहल-पहल से भरा रहता था। ऐसा मुझे मेरे काका ने बताया था।

सरकारी दरबार में उसका सम्मान था। अंग्रेजों के समय में कलेक्टर आफिस में उसे बैठने के लिए कुर्सी मिलती थी। वह एक बहुत दयालु धार्मिक सात्विक स्वभाव की महिला थी। वह उदार हाथों से मदद करती थी। गरीब परिवार के लड़कियों की शादी में धन और धान्य से मदद करती थी।

इतने भर से श्रीमती आशक्काबाई शिवराम सावकार गोविंदवार की कहानी खत्म नहीं होती है। सांवगी पेरका गांव से पास थाटेश्वर तीर्थ धाम मंदिर, वर्धा नदी पर एक बड़ा मंदिर बनाया था। उसे तीर्थ स्थल का रूप दिया था।

जहां आज़ भी उसके दान धर्म बोलता है। मंदिर की व्यवस्था के लिए क़रीब सौ एकड़ जमीन उन्होंने मंदिर को दान दी थी। जो वर्धा नदी के दोनों किनारों पर है। शिवरात्रि को थाटेश्वर मंदिर का पुरन पोड़ी का खाना आज़ भी प्रसिद्ध है। इसी मंदिर में संत मारोती महाराज की समाधि है। असल में यह एक राम मंदिर है। 1954 में इसका निर्माण श्रीमती आशक्काबाई शिवराम सावकार गोविंदवार ने किया था। उस तीर्थ धाम की मुख्य ट्रस्टी भी वह थी। वर्धा नदी इस जगह पर उत्तर दिशा में बहती है। यह इस तीर्थ स्थल को विशेष बनाता है।

थाटेश्वर तीर्थ धाम मंदिर का संचालन पेरकी समाज बंधुओं के पास है। उसमें प्रमुख हमारे दोनों काका श्री दिगम्बरराव उद्धवराव गोविंदवार और श्री मनोहर शिवराम गोविंदवार है।

नदी के दूसरे किनारे पर कोटेश्वर तीर्थ स्थल है। जहां लोग अस्ती विसर्जन का काम करते हैं। उसे महाराष्ट्र सरकार ने विकसित किया है।

श्रीमती आशक्काबाई शिवराम सावकार गोविंदवार की कहानी खत्म हो जाती है, उसके देहांत के बाद। उसके कुशल कर्मों का स्मरण करते वाला थाटेश्वर तीर्थ धाम आज़ भी विद्यमान है। जहां हर शिवरात्रि को भव्य मेला लगता है। पुरण पोड़ी का प्रसाद बांटा जाता है। यहीं श्रीमती आशक्काबाई शिवराम सावकार गोविंदवार के पुण्य कर्मों का स्मरण हो आता है। आदमी खाली हाथ आता और खाली हाथ लौट जाता है। जाते-जाते थाटेश्वर तीर्थ धाम जैसे तीर्थ स्थल बना जाता है। जो उसके नाम को जिंदा रखने में मदद करते है।

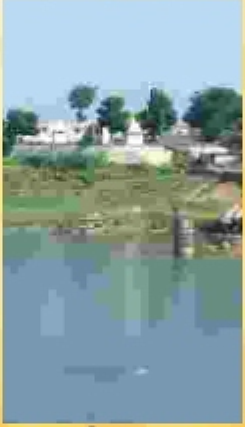

BW

पेरकी समाज की महिला उद्यमिता और उद्यमियों का वर्तमान और इतिहास का लेखा जोखा प्रस्तुत है !

आशा है कि आप पसंद करेंगे और महिला उद्यमियों की हौसला अफजाई करेंगे !

लेखक :- प्रकाश पारो गणपतराव गोविन्दवार, नागपुर

भारत देश को पुरुष प्रधान देश कहा जाता है। व्यापार व्यवसाय की बागडोर पुरुषों के हाथों में होती है। महिलाओं के हिस्से में घर और बच्चों की जिम्मेदारी होती है। अब परिस्थितियां बदल चुकी है। यह इक्कसवीं सदी है। नौकरियों के साथ व्यवसाय में भी महिला वर्ग की सक्रियता बढ़ गई है।

इस साल के पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप की वार्षिक पत्रिका 2024 का मुख्य विषय महिला उधमिता और उधोजिका है। पेरकी समाज की महिलाओं के काम धंधे के बारे में जानकारी देना है। ताकि पेरकी समाज अपने समाज की महिलाओं के बारे में गर्व महसूस कर सके। उनसे मोटीवेशन प्रेरणा प्राप्त कर सकें।

महिला उधमिता विशेषांक निकालने की मुख्य वजह मेरी मां पारों गणपतराव गोविन्दवार है। जो स्वयं एक सतरंजी कारखाने का संचालन करती थी। पिछले साल डिसेंबर में उनका देहांत हुआ है। यह महिला उद्योजिका विशेषांक उनको समर्पित है।

इस महिला उधोजिका विशेषांक में ऐसे ही कुछ पेरकी समाज की महिलाओं की जानकारी देने की कोशिश की गई है। पेरकी समाज की व्यवसाई महिलाओं का इतिहास खंगाला गया है। पेरकी समाज का इतिहास खंगालने पर कुछ कामकाजी कारखानेदार, उद्यमी महिलाओं की जानकारी मिली है। उनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है।

1) सवा सौ साल पहले की बात है। पेरकी समाज की एक अनपढ़ तेलुगू भाषिक महिला ने मुंबई का पहला बीड़ी कारखाने की नींव रखी थी। अंग्रेज सरकार से बीड़ी बनाने का लायसेंस प्राप्त किया था। उसका नाम श्रीमती काशीबाई यलुप्पा चिंतम (चिंतमवार) था। वह तेलगु भाषी आंध्रप्रदेश के निजामाबाद जिले से आयी थी। वह पति और परिवार संग मुंबई के कमाठीपुरा में रहती थी। वह स्वयं एक कुशल बीड़ी कारीगर थी । उसका विस्तृत विवरण डॉ राम बोडेवार द्वारा लिखित ग्रन्थ 'पेरकी समाज आज और कल' में मिलता है।

उसने करीब तीन सौ लोगों को प्रत्यक्ष रूप से रोज़गार दिया था। काशीबाई यलुप्पा एंड कंपनी के ब्रांड नाम से वह बीड़ी का उत्पादन करती थी। महाराष्ट्र, गुजरात के सौराष्ट्र और कच्छ में बीड़ी का निर्यात करती थी। पति के अकस्मात् निधन के बाद उसने अपने रिश्तेदारों और लड़कियों की मदद से बीड़ी बनाने और बेचने के काम को आगे बढ़ाया था। अपने पंद्रह से ज्यादा रिश्तेदारों को तंबाकू और बीड़ी की दुकानें शुरू करके दी थी।

वह बड़ी परोपकारी महिला थी। उसके परिवार के सदस्यों का पेरकी समाज को मुंबई में संगठित रखने में योगदान था। श्रीमती काशीबाई यल्लप्पा चिंतम (चिंतमवार) को पेरकी समाज की ज्ञात पहली कारोबारी, उधोजिका महिला कहा जा सकता है। उसके स्मृतियों को अभिवादन और आदरांजलि !

2) पिछले पैंतीस साल से पेरकी समाज की एक बहुत ही सेवा भावी महिला हैंडीक्राफ्ट सिखाकर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने का काम कर रही है। महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराने का काम कर रही है। सौ. शांताबाई शंकरराव पंचलवार नाम है उनका। वह मोहन नगर नागपुर में रहती है।

श्रीमती शांता पंचलवार जी नागपुर में बड़ी संख्या में महिलाओं को हैंडीक्राफ्ट में प्रक्षिशित किया है।

श्रीमती शांता पंचलवार जी के कार्यों के बारे में पेरकी समाज की एक लाभार्थी महिला ने मराठी में संक्षिप्त जानकारी दी है।

'सौ. शांताबाई शंकरराव पंचलवार यांच्या कार्यप्रवृत्तीतून एक प्रेरणादायी जीवनकहाणी उलगडते. त्यांच्या समाजसेवेची सुरुवात विनय महिला बँकेत काम करत असताना झाली, पण त्यांनी आपले संपूर्ण जीवन गरजू महिलांना आत्मनिर्भर करण्यासाठी समर्पित केले. 'अभिलाषा महिला बहुउद्देश विकास संस्था' स्थापन करून त्यांनी महिलांना शिवणकाम आणि ब्युटी पार्लरसारख्या कौशल्यांचे मोफत प्रशिक्षण दिले, ज्यामुळे अनेक महिलांना आर्थिकदृष्ट्या सक्षम होण्याची संधी मिळाली.'

'त्यांचे हे कार्य आणि समर्पण नव्या पिढीसाठी एक प्रेरणादायी उदाहरण आहे, ज्यामुळे त्या समाजात आदर्श म्हणून ओळखल्या जातात.'

3) वर्तमान में पूना निवासी श्रीमती गीता नानाजी अंकतवार की कहानी बहुत ही कम लोगों को पता है। वह एक बहुत ही संघर्षशील महिला की है। उनकी कहानी एक फिल्म कहानी जैसे है। अपने भागे हुए पति को ढूंढते हुए वह पूना पहुंच जाती है। वे मूलतः कोदूरली गांव, रालेगांव तहसील यवतमाल जिले की है। बच्चे छोटे रहते हुए पति ने कर्ज की वजह से दो साल के लिए गांव छोड़ दिया था। दो साल तक यह अभागी महिला अपने पति को ढूंढते रही थी। पति को ढूंढते हुए वह पूना पहूंची थी। वहां उसने अपने पति को वड़ा पाव और चाय नाश्ते की दुकान चलाते देखा। फिर वह वही बस गयी। अपने पति की नाश्ते की दुकान की दुकान को संभालने लगी थी। साथ ही उसने विद्‌याथिर्यों के मेस शुरू किया। इस बीच उसके पति भी गुजर गये।

अपनी कमाई से दो लड़कियों की शादी की। रालेगण में पक्का घर बनाया। लड़का पूना में नौकरी करता है। यह सब एक महिला ने उधोजिका व्यवसाई दुकानदार बनकर संभव किया है। उधमी व्यवसाई बनकर अपने परिवार को पालने पोसने का काम किया है। पेरकी समाज की इस महिला उद्‌यमी को पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप उसके हौसले और हिम्मत को सैल्यूट, अभिनंदन और अभिवादन करता है।

BW

4) वकीली क्षेत्र भी व्यापार, उद्योग जैसे ही एक व्यवसाय है। इसे सेवा क्षेत्र कहा जाता है। सलाह सेवाएं प्रदान करके वकील भी एक व्यवसाय करता है।

पेरकी समाज के लिए बड़ी खुशी की बात है। वर्तमान में वकीली व्यवसाय में पेरकी समाज की में कुल मिलाकर चार युवा लड़कियों ने पदार्पण किया है। उसमें से एक लड़की का नाम एडवोकेट वैष्णवी धर्मराव बोरकुंटवार है। नागपुर के एक नामी गिरामी वकील के मार्गदर्शन में वह वकीली कर रही है। एडवोकेट वैष्णवी एक बहुत ही अच्छी वक्ता है। मुझे एक बार उसका भाषण सुनने का अवसर मिला था। विषय पर अच्छी पकड़ रखती है और बोलने में स्पष्ट है।

वह अपने माता-पिता के साथ रा. - वॉर्ड न. 5 , शांती नगर , इसासनी, हनुमान मंदिर जवळ , हिंगणा रोड , नागपूर में रहती है। यही उसका वकीली आफीस है।
प्रत्येक समाज में वकीलों की बहुत अहमियत होती है। समाज और देश का नेतृत्व करने में वकील समुदाय आगे रहता है। देश की पहली संसद में सबसे ज्यादा निर्वाचित वकील थे। उनमें प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू, गृहमंत्री श्री सरदार पटेल और संविधान निर्माता डॉ बाबासाहेब आंबेडकर वकील और बैरिस्टर थें।

संविधान निर्माता डॉ बाबासाहेब आंबेडकर ने वकीलों के महत्व को बताते हुए एक बात कही थी। उन्होंने कहा था कि वे उस समाज जाति को विकसित समाज मानते हैं। जिस समाज में प्रत्येक सौ लोगों में से दस वकील और बीस डाक्टर और तीस इंजिनियर हैं। इस मापदंड पर पेरकी समाज खरा नहीं उतरता है। पेरकी समाज में वकीलों की संख्या बहुत कम है। पेरकी समाज का दूर्भाग्य अब तक कोई जज, कलेक्टर और पुलिस कमिशन्र नहीं बन पाया है। भविष्य में महिला वकीलों से उम्मीद करें !

5) जीवन बीमा निगम की पालिसी बेचने का काम भी एक सेवा क्षेत्र है। लोगों को अपने फायदे का काम समझाने के लिए भी बहुत मेहनत करनी पड़ती है। यह इस व्यवसाय का दूर्भाग्य है। जबकि जीवन बीमा का विज्ञापन कहता है। जीवन बीमा आग्रह की चीज नहीं है। जीवन की आधारभूत जरूरत है। यह इस व्यवसाय का दुर्भाग्य और सौभाग्य दोनों भी है। बीमा एजेंट के तौर पर काम करना सबसे पुण्य का काम है। जमा राशि संकटों में काम आती है। तब पालिसी धारक के आंखों में आसूं आ जाते हैं।

इस जीवन बीमा निगम के सेवा क्षेत्र में पेरकी समाज की एक महिला ने कम समय में बहुत नाम कमाया है। उसका नाम है श्रीमती आशा राजेन्द्र तामशेट्टीवार, आरमोरी गढ़चिरौली जिले में रहती है। वह एल आय सी एजेंट के तौर पर गढ़चिरौली जिले की टाप परफार्म रही है। उनके पालिसी ग्राहक देशी और विदेशी भी है। इसी जीवन बीमा निगम ने उन्हें अमेरिका घुमाकर लाया है। पांच साल में एक हजार से अधिक

पालिसी बेचने में वह सफल रही है। यह सब कुछ उन्होंने बच्चों के बड़े होने और कालेज जाने के बाद शुरू किया था। महिलाएं किसी भी उम्र में कोई भी काम काज शुरू कर सकती है। यह इस बात का सबसे अच्छा उदाहरण है।

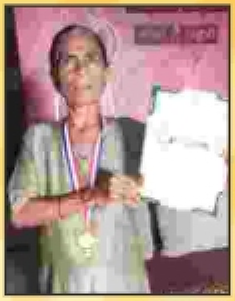

6) योगासन को आज स्पोर्ट्स का दर्जा हासिल हो गया है। ऐसे ही एक स्पोर्ट्स वूमेन का पेरकी समाज को परिचय देना आवश्यक है। पेरकी समाज की एक वयोवृद्ध महिला योगाभ्यास सिखाती है। योग ध्यान आसन स्पर्धा में बढ़-चढ़कर भाग लेती है। पुरूस्कार और ट्राफी जीतती है। लोगों को योग-साधना सीखाकर बूढ़े लोगों को तंदुरुस्त रखने में मदद करती है। वह हमारे मित्र श्री गोपी सालिकराम बाकमवार की मां है। वे गुरुदेव नगर, सखरदरा चौंक नागपुर निवासी राधाबाई सालिकराम बाकमवार है। लोगों को और खुद को योगासन के माध्यम से चुस्त दुरुस्त रखता भी एक सेवा कार्य है। पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप उनके इस सेवा भावी कार्य की सराहना करता है। उनके लंबी उम्र की कामना करता है।(फोटो राधाबाई सालिकराम बाकमवार)

7) पेरकी समाज की भविष्य की बेडमिंटन चैंपियन सानिया नेहवाल और पीवी सिंधू से रूबरू होइएं ! उसके माता-पिता उसके लिए दिन रात एक कर रहे है। मोहननगर नागपुर निवासी पिता श्री विशाल दोरसेटवार जी रोज दिन में पांच घंटे की बेडमिंटन प्रेक्टिस के लिए खुद कार से लाना ले जाना करते है। मानकापुर स्पोर्ट्स कामलेक्स में वह बेडमिंटन कोच के मार्गदर्शन में यह नन्ही परी प्रेक्टिस करती है। कारण उसे देश के गोल्ड मेडल लाना है। देश और पेरकी समाज का नाम ऊंचा करना है।

वह दूसरी तीसरी कोई नहीं है। बल्कि वह नागपुर , मोहन नगर निवासी इन्शुरेंस व्यवसाई श्री विशाल नानेश्वर दोरसेटवार की दस साल की बेटी है। स्टेट लेवल की बेडमिंटन स्पर्धा में भाग लेती है। कुमारी अकक्षिता विशाल दोरसेटवार ने स्टेट चैंपियनशिप में तीसरा स्थान प्राप्त किया है। बैडमिंटन स्पर्धा में यह छोटी सी लड़की अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हो चुकी है। एक छोटी सी उम्र में यह एक बड़ी उपलब्धि है। हर महीने वह देश में राज्य स्तरीय बेडमिंटन स्पर्धा में भाग लेती है। पिता समय निकालकर ले जाते है। असल में माता पिता के त्याग बलिदान के बलबूते बच्चे परफार्मेंस देते है। आशा करें एक दिन कुमारी अकक्षिता विशाल दोरसेटवार पेरकी समाज और देश का नाम रोशन करेंगी। पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप उनकी सफलता की कामना करता है।

8) पेरकी समाज की एक लड़की लीक से हटकर एक नये क्षेत्र में काम करती है। पेरकी समाज का नाम रोशन करती है। जब वह रेडियो कार्यक्रम में अपना सरनेम अंगलवार जोर से चिल्लाकर बोलती है। उसके उल्लेख के बगैर पेरकी समाज महिला उधमिता विशेषांक पुरा नही हो सकता है।

वह है मोहननगर नागपुर निवासी आरजे रेडियो अनाउंसर अनुश्री मुकेश अंगलवार है। पिछले पांच वर्षों से वह दो से ज्यादा रेडियो केन्द्र में काम कर चुकी है। फिलहाल वह रेडियो सीटी में मुख्य रेडियो अनाउंसर है। एक व्यक्ति के अच्छे और लीक से हटकर काम करने की वजह से उसके तीन पीढ़ियों का नाम रोशन होता है। इसका उदाहरण रेडियो सिटी की मशहूर अनाउंसर आरजे अनुश्री मुकेश अंगलवार, मोहन नगर , नागपुर निवासी है।

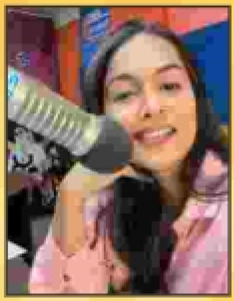

रेडियो सीटी अनाउंसर आरजे अनुश्री मुकेश अंगलवार की दादी श्रीमती बेबी अंगलवार जी है। श्रीमती बेबी अंगलवार के पिता श्री पुंडलीकराव तामसेटवार पेरकी जनसंघम संगठन के उपाध्यक्ष रह चुके है। उन्होंने पेरकी समाज के अनेक लोगों को एम एस ई बी की सरकारी नौकरी में लगाकर दी थी। इस तरह से एक व्यक्ति की वजह से उसके तीन पीढ़ियों का नाम रोशन होता है।

वह एक अच्छी रेडियो जाकी और अनाउंसर के अलावा बहुत ही अच्छी अभिनेत्री भी है। उसके इंस्टाग्राम पर जाकर आप उसके टेलेंट का अंदाजा लगा सकते है। उसके इंस्टाग्राम को फालो करें और रोज नया कुछ सुनें। पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप इस उत्साही युवती के उज्वल भविष्य की कामना करता है और शुभकामनाएं देता है।

9) पेरकी समाज की एक मात्र अविष्कारक लड़की कुमारी समीक्षा राजेन्द्र बातुलवार है । उसने एक बहुत ही उपयोगी यंत्र मशीन का अविष्कार किया है। महाराष्ट्र सरकार ने उसे दस हजार रुपए का इनाम भी दिया है। वह पेरका सांवगी गांव, रालेगांव तहसील,यवतमाल जिले में रहती है। इस एक भूमिहीन किसान मजदूर की बेटी कु. समीक्षा राजेन्द्र बातुलवार ने समझा अपने पिता के दर्द को। उस दर्द ने जन्म दिया एक ऐसे अविष्कार को जो बोरी में अनाज भरने के मेहनती काम को बनाता है बहुत सरल और आसान।

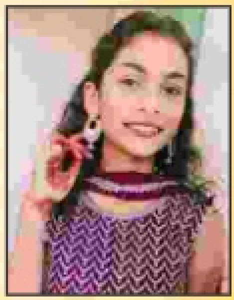

इसके लिए कु. समीक्षा राजेन्द्र बातुलवार अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हो चुकी है। वह एक बहुत ही अच्छी चित्रकार भी है। सभी अखबारों में उसकी कहानी छप चुकी है। पेरकी समाज की इस भविष्य की वैज्ञानिक लड़की को पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं देता है। (फोटो मशीन, पेपर कटिंग)

मुलगी ओझे नसते... ओझे हलके करीत असते..!

10) मोहन नगर, नागपुर निवासी और ट्यूशन क्लास व्यवसाई श्रीमती आरती रमेश एंनचलवार जी पेरकी समाज की उन कुछ महिलाओं में से एक है। जिन्हें बचपन से ही बच्चों को पढ़ाने का शौक था। वे पढ़ते हुए ट्यूशन पढ़ाते आयी

BW

है। आज उनके पास अच्छी खासी संख्या में बच्चे पढ़ने आते है। वह पेरकी जनसंघम संगठन सचिव श्री रमेश अंकतवार जी की भतीजी है। मेरे काका श्री शंकर सहदेव गोविंदवार जी की बहू भी है। पति श्री रमेश एंनचिलवार का कैटरिंग और बर्तन किराए पर देने का व्यवसाय है। शादी के बाद भी उन्होंने दसवीं तक के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाना शुरू रखा था।

ट्यूशन पढ़ाना एक घरेलू कुटीर उद्योग जैसे ही है। जरूरत इस व्यवसाय को गंभीरता से लेने की है। बच्चों के भविष्य को उज्जवल बनाने से ज्यादा दूसरा कोई सेवा भावी व्यवसाय नहीं है। पेरकी समाज की पढ़ी लिखी महिलाओं ने घर में खाली बैठने से अच्छा बच्चों को ट्यूशन पढ़ाना शुरू करना चाहिए। यह घर बैठे एक अच्छा खासा कमाई का साधन बनता है।

11) गढ़चिरौली जिले में भी बड़ी संख्या में पेरकी समाज निवास करता है। गढ़चिरौली जिले के चामोर्शी तहसील के आष्टी और ठाकरी में तीन पेरकी समाज की महिलाएं अपने बलबूते पर कपड़े की बड़ी दुकानें चलातीं है। उनमें से एक महिला का कपड़ों का बड़ा शोरूम है।

पेरकी समाज के लिए यह बहुत ही गौरवास्पद और अभिमान की बात है। पेरकी समाज की महिलाएं दुकानदारी में बड़ा दखल रखतीं हैं। व्यवसाय में उनकी सक्रिय भागीदारी परिवार की आर्थिक उनन्ति को सुनिश्चित करती है। उनके इस कार्य में उनके पति की मदद शामिल हैं। पुरुष वर्ग के मदद के बगैर महिला उद्यमी सफल नहीं हो सकती है। कुछ अपवाद छोड़ कर।

दुकानदारी करते समय एक बात हमेशा याद रखें। ग्राहक कभी किसी का सग्गा नहीं होता है। ग्राहक सिर्फ और सिर्फ ग्राहक होता है। उसे जहां भी फायदा नजर आता है। रेंज वेराइटी मिलती है। वहीं वह खरीददारी करता है। चाहें महंगा क्यों नहीं हो। उसे अपने मन का चाहिए। महंगा ही क्यों नहीं सही !

इसलिए मेरे मित्र सिन्धी मारवाड़ी गुजराती व्यापारी व्यवसाई दुकानदार एक बात कहते हैं। अच्छे नफें पर काम करें। ऊंची चीजें ऊंची कीमती पर बेचें। ऊंचे कीमत पर बेचकर धन कमाएं। कल का कोई भरोसा नहीं है। ग्राहकों पर कोई रहम नहीं करें। नुकसान का कोई साथी नहीं होता है।

12) गढ़चिरौली जिले के चामीशी तहसील के आष्टी में श्रीमती दीपाली शंकर बुद्धेवार एक बड़ी कपड़े की दुकान की मालकिन है। उनमें दुकान का नाम गायत्री वस्त्रालय अँड म्याचिंग सेंटर है। वे बहुत कुशलतापूर्वक अपने इस कपड़े की दुकान को चलाती है। उनके पति श्री शंकर जी का भी सहयोग और मार्गदर्शन हासिल है। महिलाएं महिला वर्ग से संबंध बनाने में माहिर होती है। दुकान संबंधों के भरोसे ही चलती है। वाजिब कीमत और उत्कृष्ट दर्जे का माल दुकानों को सफल और संपनन्‍बनाता है।

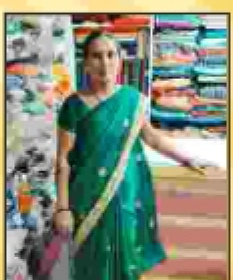

BW

13) उसी तरह पेरकी समाज की एक और महिला उसी आष्टी में कपड़े के शोरूम को चलाती है। उनका नाम है श्रीमती पौर्णिमा ईश्वर बोलगोडंवार । वे भी आष्टी में एक कपड़े की दुकान बड़ी कुशलता और इमानदारी से चलाती है। ग्राहकों के साथ व्यवहार में वे कार्य कुशल है। उनके दुकान का नाम महालक्ष्मी जनरल स्टोअर्स ॲण्ड मॅचिंग सेंटर है। जो आष्टी में चामीशी तहसील और जिला गढ़चिरौली में है। (फोटो)

14) उसी आष्टी तहसील के ठाकरी गांव में पेरकी समाज की एक और महिला उधमी दुकानदार है। उनका नाम श्रीमती सुजाता भगिरथ गुंमफलवार है। उनके दुकान का नाम उनके ही नाम पर है। पुरुष प्रधान समाज में यह बहुत कम होता है। उनके दुकान का नाम सुजाता साड़ी ड्रेस जनरल स्टोर है। ठाकरी गांव पेरकी बहुल बस्ती है। इस गांव के सबसे ज्यादा पेरकी समाज के लोग सरकारी नौकरियों में है। अधिकांश शिक्षक है। यह एक बहुत ही सुखी संपनन गांव है।

आज के दौर में महिला वर्ग के लिए कपड़ों की दुकान शूरू करना बहुत आसान काम है। कारण उन्हें फैशन की अच्छी समझ होती है। फैशन की अच्छी समझ वाला व्यक्ति ही कपड़े का व्यवसाय कर सकता है। पहले कुछ महीने वह किसी कपड़े की दुकान में अनुभव हासिल करने के लिए नौकरी कर लें। क्या बिकता है और क्या नहीं बिकता है। कितना बिकता है। यह जान लें। उसके बाद ही कोई कपड़े की दुकान डालें।

उसके बाद किराए की दुकान लेकर छोटी लागत में दुकान शुरू करे। उसके बाद दुकान में स्टाक बढ़ाने के लिए सरकारी बैंकों में संपर्क करें। तीस प्रतिशत की सब्सिडी पर सभी बैंकों में लोन ऋण उपलब्ध है। बगैर गारंटी और जमानत के वह भी। प्रधानमंत्री बेरोजगार योजना के अंतर्गत आनलाइन आवेदन कर सकते है। सीए या इनकम टैक्स रिटर्न भरने वाले वकील की मदद ले। बैंक मैनेजर से उनकी अच्छी सेटिंग होती है। इसके लिए दस बीस हजार अतिरिक्त खर्च करने पड़ते है।

15) हमारे परिवार में फिलहाल दो दुकानें है। एक घर पर ही मेन सीमेंट रोड पर दवाई की दुकान है। स्वर्ण समृद्धि हेल्थ केयर अजय आरोग्यधाम मिलींदनगर वैशाली नगर के पास, नागपुर में स्थित है। एक हेल्थ केयर सेंटर से अटैच दवाई की दुकान है। जहां रोज चार डाक्टर अपनी सेवाएं देते है। सेमी चेरेटी के तौर पर चलाया जाता है। मेरे पिता श्री गणपतराव महादेव गोविंदवार के स्मृति में इस हेल्थकेयर सेंटर का संचालन होता है।

हम अपनी इस दवा दुकान के माध्यम से आयुर्वेदिक दवाओं को बढ़ावा देने है। सौ साल पुरानी महर्षि फार्मा, महेश योगी वैदिक धर्म

BW

गुरु के कंपनी की दवाएं बेचते है। इसमें अमृत कलश चवनप्राश प्रमुख है। जो आपको साल भर तन्दरूस्त रखने में सहायक है। यह दुनिया का सबसे कीमती चवनप्राश है। इसकी कीमत बावीस सौ रुपए है। अगर आप के पास अपनी अच्छी सेहत के रुपए हो तो इस पर जरूर खर्च करें। साल भर सेहतमंद और तंदुरूस्त रहे। मेरी पतनी कविता गोविंदवार इस स्वर्ग समृद्धि फार्मेसी दवाई दुकान का संचालन करती है।

16) विजय हैंडलूम कमाल चौक नागपुर की कहानी बहुत बड़ी है। इस पर एक तीन सौ पेज़ की उपन्यास लिखी जा सकती है। बहुत संघर्षों को नागपुर में मशहूर किया गया है। एक अनूठे तरीके से बड़ी संख्या में ग्राहकों को जोड़ने का काम किया गया है। वह है पंद्रह हजार ग्राहकों को उनके नाम की नेमप्लेट मुफ्त में बनाकर दी गई है।

हमारे परिवार की यह तिसरा उपक्रम है। पहला सतरंजी कारखाना और उसके बाद दो दुकानें। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दुकान विजय हैंडलूम कमाल चौक नागपुर के माध्यम से हमने संबंधों को बढ़ाने के लिए एक अनोखा प्रयोग किया था।

बहुत सालों तक यह दुकान मेरे सोशल नेटवर्किंग को फ़ैलाने का एक साधन थी। बहुजन आर्थिक आंदोलन का आफीस था। नागपुर और खास करके उत्तर नागपुर में अनगिनत लोगों से संबंध जोड़ने का काम किया था। इस दुकान में ग्राहकों को जोड़ने के लिए दुनिया का एक मात्र अनोखा प्रयोग किया गया था। वह था दस वर्ष लगातार पंद्रह हजार लोगों को उनके नाम की नेमप्लेट मुफ्त में बनाकर दी गई थी। पंद्रह हजार लोगों का नाम पता और मोबाइल नंबर जमा है। व्यापार व्यवसाय बढ़ाने और ग्राहकों से संबंध घनिष्ठ करने के लिए यह प्रयोग किया गया था। बारह लाख रुपए नेमप्लेट बनाने में खर्च किए गए थे। बदले में महाराष्ट्र के सभी बड़े अखबारों में हमारे इस उपक्रम की खबरें छपीं थी। यह विजय हैंडलूम कमाल चौक नागपुर के दुकान की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

पेरकी समाज के किसी भी व्यक्ति को बेडशीट, पर्दे, होम डेकोर जैसे हैंडलूम की दुकान शुरू करनी हो तो ! मुफ्त में मार्गदर्शन और फायनेन्शियल लोन ऋण उपलब्ध है।

वर्तमान में इस दुकान की मुख्य संचालिका श्रीमती आरती विजय गोविंदवार है। एक महिला उधमी श्रीमती आरती विजय गोविंदवार , नागपुर द्वारा संचालित है।

17) पेरकी समाज बहुत सी महिलाएं स्वास्थ्य क्षेत्र में काम कर रही है। कुछ डाक्टर बनकर और कुछ नैचुरोपैथी के क्षेत्र में। श्रीमती वर्षा राधेश्याम दोरसेटवार पेरके का खुद का त्रिमुर्ति नगर नागपुर में नैचुरोपैथी क्लीनिक है। उनके दवाखाने का नाम शाकम्बरी हैल्थ है। नैचुरोपैथी, सुजोक एक्यूपंक्चर और स्माइल मुद्रा हीलिंग थेरेपी द्वारा असाध्य बिमारियों का इलाज करती है।

BW

श्रीमती वर्षा पेरके दोरशेतवार हमारे मित्र नरेंद्र नगर नागपुर निवासी श्री संतोष बुरेवार जी की बहन है। पति श्री राधेश्याम दोरसेटवार जी प्रापर्टी डीलर है।

उन्होंने शाकम्बरी हैल्थ के बारे में निमनलिखित जानकारी दी है। उपरोक्त प्रक्रिया के माध्यम से बिना किसी दवाई के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक माध्यम से जटिल से जटिल बीमारियों का इलाज किया जाता है। विशेषता सर्वाइकल स्पोडलाइटिस, क्वा pain, back pain, आर्थराइटिस और भी अन्य बीमारियां को जड़ से खत्म करने का प्रयास किया जाता है। मंदबुद्धि (autism) बच्चों का मुद्रा हीलिंग और मेडिटेशन द्वारा इलाज किया जाता है । नेचरोपैथी क्षेत्र में श्रीमती वर्षा राधेश्याम दोरसेटवार नाम कमाएं ! इन्हीं शुभकामनाओं के साथ उनके इस सेवा कार्य को नमन और अभिनंदन।

18) पेरकी समाज के समाज सेवक और बिल्डर दिवंगत श्री शंकरराव पैडलवार जी की एक पुत्री डाक्टर है। उनका नाम डॉ मोनिका किरण पेट्टेवार है। उनके पति डॉ किरण पेट्टेवार और उनके पिताजी डॉ मोरेश्वर डी पेट्टेवार मिलकर धनवंतरी क्लीनिक चलाते है। यह धनवंतरी क्लीनिक जानकी नगर, उदय नगर के पास, नागपुर में स्थित है। इसमें उनकी एक दवाई की दुकान भी है। एक परिवार के तीन डाक्टर मिल कर काम करने वाले बहुत कम डाक्टर परिवार पेरकी समाज में है। डॉ मोनिका किरण पेट्टेवार जी को उज्जवल भविष्य की सफलता के लिए शुभकामनाएं ।

सबसे आखिर में पेरकी समाज की राजनीति से जुड़ी कुछ महिलाओं के बारे में। राजनीति को व्यवसाय बनाकर भी समाज सेवा की जा सकती है। इसका अच्छा उदाहरण आज के सभी नेता है। राजनीति में भी पेरकी समाज की कुछ महिलाओं ने अपना नाम ऊंचा किया है। वे महिला वर्ग से आती है। उनके बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत है।

19) 63 वर्षीय श्रीमती दुर्गाताई शिवनारायण अच्छेवार पेरकी समाज की पहली महिला है , जो पिछले चालीस साल से राजनीति में सक्रिय है। कांग्रेस पार्टी में ऊंचे पदों पर काम किया है। वर्तमान में वे नागपुर जिले की कांग्रेस पार्टी की महामंत्री है। इससे पहले वे वार्ड मेंबर का चुनाव जीत चुकी है। कामठी नगर निगम में वाटर वर्क्स विभाग की सभापती रह चुकी है। उन्हें सरकारी पदों पर काम करने का अच्छा खासा अनुभव है। इससे पहले वे कामठी में कांग्रेस पार्टी की अध्यक्ष भी रही है।

स्वभाव से कोमल, मृदु और सेवाभावी स्वभाव की है। कांग्रेस पार्टी की एक अच्छी कार्यकर्ता के तौर पर उनकी पहचान है। राजनीति में महिला वर्ग को अवसर बहुत कम मिलता है। फिर भी वह कामठी की राजनीति में अपना स्थान बनाने में कामयाब रही है। यह उनकी लगन और मेहनत और सेवा भाव की वजह से संभव हुआ है।

BW

श्रीमती दुर्गाताई शिवनारायण अच्छेवार जी की पहचान उनके पिता से भी होती है। पिता श्री पुंडलीक तामसेटवार जी पेरकी जनसंघम संगठन में उपाध्यक्ष पद पर कार्यरत थे। जिन्होंने सरकारी नौकरी में, बिजली विभाग में पेरकी समाज के सैकड़ों पेरकी बंधूओं को इलेक्ट्रीक बोर्ड एम एस ई बी में नौकरी में लगाया था। कामठी का संपूर्ण पेरकी समाज उनके इस कार्य का ऋणी है।

श्रीमती दुर्गाताई शिवनारायण अच्छेवार जी को उनके भावी राजनैतिक जीवन के लिए पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप की हार्दिक शुभकामनाएं !

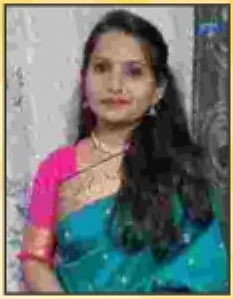

20) नागपुर से लगकर कमलेश्वर रोड पर फेटरी गांव है। वहां की उपसरपंच पेरकी समाज की एक उत्साही इंजिनियर लड़की है। है। एक पिता अपने इंजिनियर लड़की को किस तरह से राजनीति में प्रोमोट करता है। इसकी यह कहानी है। उनके बारे में उनके पिता श्री सुनील डोडेवार जी ने निमनलिखित जानकारी मराठी में दी है। पढ़ें और इस पेरकी समाज की होनहार भविष्य की महिला नेता को शाबाशी और शुभकामनाएं जरूर दें ! पिता और पुत्री की हौसला अफजाई करें।

कु.मृणाली सुनील दोडेवार, उपसरपंच ग्रामपंचायत फेटरी,
बि.ई.ईलेक्ट्रॉनिक्स अ‍ॅन्ड टेलिकम्युनिकेशन

वयाच्या बावीसाव्या वर्षी राजकारणात एन्ट्री आणि नागपूर ग्रामीण तालुक्यातुन सर्वांत जास्त मतांनी विजय मिळवला आणि अविरोध फेटरी गावची उपसरपंच बणुन आपल्या पेरकी समाजाचा गौरव वाढविला.

पेरकी जनसंघम कडुन पश्चिम नागपूरचे आमदार विकासजी ठाकरे यांच्या तर्फे सत्कार करण्यात आला.

वडिलांचा राजकीय वारसा पुढे नेत आहे

मी स्वतः पण फेटरी वार्ड क्रं 3 चे ग्रामपंचायत सदस्य म्हणून 2007 मध्ये माळी समाजाच्या गावात तिन घराचा पेरकी करोडपती विरोधकास हरवुन निवडुन आलो.

आणि त्याचप्रमाणे माझी मुलगी पण कुणबी समाजाच्या दोन करोडपती महिलांना हरवुन भरघोस मतांनी निवडून आली.

कु.मृणाली सुनील दोडेवार जी को उनके भावी राजनैतिक जीवन के लिए पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप की हार्दिक शुभकामनाएं और बंधाई !

पेरकी समाज, पेरकी समाज की महिला उद्यमियों और उद्योगपतियों से उज्जवल भविष्य आशा करें । वह कोई बड़ा उधोग लगाने में सफल हो ! या कोई बड़ी साफ्टवेयर कंपनी का संचालन करें ! जिसकी मार्केट वैल्यू सौ करोड़ रुपए से ज्यादा हो ! जिसके शेअर , शेयर स्टाक मार्केट में बिकने के लिए रजिस्टर हों !

इसी शुभकामनाओं के साथ पेरकी समाज की तमाम माता बहनों को, महिला उधोजिकाओं को सलाम, सैल्यूट ,अभिनंदन और अभिवादन ! पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप उनके उज्जवल भविष्य की सफलता की कामना करता है ! उन्हें शुभकामनाएं और उधोजिका बनने की बधाई देता है !

BW

स्त्रीचा आदर आणि घरगुती हिंसाचाराची कटू सत्यता

-ॲड. अंजली दीपकराव तामशेट्टीवार, नागपूर

- विषय -
कानून कायदे

हिन्दू संस्कृतीत स्त्रीला देवीचा दर्जा दिला आहे.
तिला देवीच्या देवीच्या रूपात पूजले जाते
'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।'
अर्थात - जिथे स्त्रीची पूजा होते तिथे देवता वास करतात,
जिथे तिचा मान राखला जात नाही तेथील सर्व कार्ये निष्फळ ठरतात.

प्राचीन काळापासून भारतात स्त्रीला आदराचे आणि सन्मानाचे स्थान मिळाले आहे. देवी दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती यांसारख्या शक्तींच्या माध्यमातून स्त्रीच्या सृष्टीतल्या महत्वपूर्ण भूमिकेचे वर्णन केले आहे. नवरात्रात देवीची पूजा आणि आराधना केली जाते. यामध्ये तिची शक्ती, साहस आणि कर्तृत्व यांना महत्व दिले जाते. स्त्रीच्या या अद्वितीय स्थानामुळे तिला समाजात आदर्श म्हणून पाहिले जाते. पण हे लक्षात घेणे महत्वाचे आहे की जरी स्त्रीला देवी मानले जात असले, ती पूजनीय असली तरी कित्येक प्रकारच्या अत्याचारांना तिला सामोरे जावे लागते, आणि त्यापैकीच एक म्हणजे घरगुती हिंसाचार.

घरगुती हिंसाचार हा समाजातील एक गंभीर आणि चिंताजनक विषय आहे. भारतात अनेक स्त्रिया या समस्येचा सामना करीत आहेत. घरात जेव्हा आपल्याच लोकांकडून स्त्रीवर अत्याचार होतो यापेक्षा दुर्दैवाची बाब काय असणार. सोप्या शब्दात घरगुती हिंसाचार म्हणजे पति, सासू किंवा इतर कुटुंबियांकडून होणारे शारीरिक, मानसिक आणि आवनिक अत्याचार. हे एक प्रकारचे शोषण आहे, जे विशेषतः महिलांवर जास्त प्रमाणात होत असते पण आजकाल पुरुष आणि मुले देखील याचे बळी ठरत आहेत. याची विविध कारणे आहेत.

घरगुती हिंसाचाराची विस्तृत व्याख्या ही कायद्यामध्ये नमूद केली आहे. यात शारीरिक, लैंगिक व आर्थिक शोषण, शाब्दिक आणि भावनिक अत्याचार यांचा समावेश होतो. एखाद्या व्यक्तीचे असे कृत्य ज्यामुळे दुसऱ्या व्यक्तीच्या आरोग्याला, जीवनाला किंवा शरीराला इजा पोहोचते, ज्यामुळे त्या व्यक्तीची सुरक्षितता धोक्यात येते किंवा तसे करण्यास प्रवृत करते मग ते मानसिक असो वा शारीरिक. उदा. शिवीगाळ करणे, मारहाण करणे, हुंड्याकरिता छळ करणे, धमकावणे इ. अनेकदा स्त्रिया स्वतःवर होणाऱ्या अत्याचाराविरुद्ध आवाज उठवण्यास घाबरतात, त्यामुळे असे प्रकार जास्तीत जास्त वेळा गुप्त राहतात. आज स्त्रिया विज्ञान, तंत्रज्ञान, शिक्षण, कला, खेळ, राजकारण, प्रशासन, व्यापार, आणि लष्कर यांसारख्या विविध क्षेत्रात पुढे येत आहेत. त्यांनी केवळ या क्षेत्रांमध्ये आपली उपस्थिती दाखवली नाही, तर नेतृत्वही सिद्ध केले आहे. तरी, स्त्रियांवर अजूनही घरगुती हिंसाचाराचे गंभीर संकट आहे.

या हिंसाचारापासून बचाव करण्यासाठी पीडित व्यक्ती महाराष्ट्रातील महिला हेल्पलाईन नंबर वर फोन करून त्वरित मदत मिळवू शकते व महाराष्ट्रातील महिला व बालकल्याण विभाग यांच्याशी संपर्क साधू शकते तसेच पोलीस ठाण्यात तक्रार करून प्रोटेक्शन ऑर्डर ची मागणी करू शकते आणि न्यायालयाकडून प्रोटेक्शन ऑर्डर मिळवू शकते. सरकारने स्त्री सुरक्षा आणि तिच्या हक्कांचे रक्षण करण्यासाठी विविध कायदे लागू केले आहेत. स्त्रियांना संविधानिक अधिकार तर आहेतच पण त्याचबरोबर अनेक असेही कायदे आहेत ज्यामध्ये त्यांना संरक्षण दिले जाते. त्यापैकीच एक म्हणजे 'कौटुंबिक हिंसाचारापासून महिलांचे संरक्षण कायदा 2005. हा कायदा भारतात महिलांच्या हक्कांचे संरक्षण करण्यासाठी लागू करण्यात आला आहे. या कायद्याअंतर्गत महिलांना सर्व प्रकारची सुरक्षा मिळते, पण केवळ कायद्यानेच हा प्रश्न सुटणार नाही तर, समाजात जागरुकता निर्माण करणे आवश्यक आहे.

घरगुती हिंसाचार थांबविण्यासाठी प्रत्येकाने पुढाकार घेतला पाहिजे. आपल्या माहितीतल्या पीडित व्यक्तींना योग्य मदत मिळावी यासाठी प्रवृत्त करायला हवे. समाजात बदल घडविण्यासाठी प्रत्येक व्यक्तीने सहभाग घेणे गरजेचे आहे. महिलांना शिक्षणाचे महत्व पटवून देणे, त्यांना स्वावलंबी बनविणे, त्यांच्या हक्कांचे रक्षण करणे, त्यांच्या सशक्तिकरणास मदत करणे त्यांना दुय्यम स्थान न देता समान मानणे आणि त्यांच्यावरील अत्याचार थांबवणे हे आपले कर्तव्य आहे. स्त्रीचा दर्जा खऱ्या अर्थाने उंचावण्यासाठी विचार आणि कृती या दोन्ही गोष्टी आवश्यक आहेत. एक जबाबदार आणि समर्पित नागरिक म्हणून महिलांना सुरक्षित समृद्ध जीवन प्रदान करणे हे अत्यावश्यक आहे

BW

व्यवसाय

- श्री भगिरथ हणमंतराव येंबडवार,
सेवानिवृत्त प्राध्यापक, मु.पो.आलापल्ली
ता. अहेरी, जिल्हा-गडचिरोली.

'व्यवसाय'हा व्यस्तपणा पासुन येतो,याचा अर्थ एखादया कियाकलापत गुंतलेला असतो. भाषेत,व्यवसाय म्हणजे कमी किमंतीत एखादी वस्तु विकत घेणे आणि जास्त किमंतीत विकणे व्यवसायाचे प्राथमिक उदिष्ठे नफा हे आहे आणि ते याच ध्येयाने चालते.

परंतु अधिक स्पष्टपणे परिभावीत करण्यासाठी ''व्यवसाय हा असा कोणताही व्यवसाय आहे ज्यामध्ये विक्रीसाठी वस्तुचे उत्पादन करणे किंवा खरेदी करणे आणि ग्राहकांना त्यांच्या गरजा पुर्ण करण्यासाठी त्यांना विकण्यापुर्वी नफा मार्जिन जोडणे याशी संबंधीत सर्व कियाकलाप समाविष्ट आहे''.

मुख्य मुदृा असा आहे की, व्यवसायाचे उदिष्ठे नफ्याने असले तरी ग्राहकांना त्यांचा गरजा पुर्ण करून ते हे साध्य करणे व्यवसायामध्ये कोणताही व्यवसाय समाविष्ट असतो जेथे लोक उत्पादत खरेदी विकी किंवा इतराच्या गरजा पुर्ण करण्यासाठी वस्तु किंवा सेवांची देवाणघेवाण करून उत्पन्न मिळवितात सर्व काही नफा मिळविण्यासाठी

शिक्षण घेत असतांनाच कोणते काम केले असतांना आपल्याला आनंद होईल आणि त्याचबरोबर अर्थार्जनही करता येईल याचा अंदाज आपल्याला आला पाहिजे. त्यासाठी लहानपणापासुन विविध व्यावसायीक आपआपला व्यवयाय कसा करतात. हे लक्षपुर्वक पाहिले पाहिजे. आपल्याला हे करायला आवडेल का, असा साधा प्रश्न स्वतःला विचारना त्यांना पैसे किती मिळतात, हे बघु नये आंनदी व्यवसायीक कसा असतो? त्याला आपण काही काम करायला जातो आहेत असे कधीच वाटत नाही कारण काम करण्यात अतिशय मजा येत असते. तिथे गेल्यावर आपले सहकारी भेटल्यावर त्याला अतिशय आंनद होतो. व्यवसायनिमित्त जे लोक भेटतात. त्यांच्याशी बोलतांना तो आपल्या मित्रांशी बोलल्यासारखे बोलतो. त्यांना काही अडचणी असतील तर त्या सोळविण्यासाठी तो सर्व प्रयत्न करतो. हे करतांना आपण काही विशेष करतो आहेत,. असे त्याला वाटत नाही.घरी आल्यावर काय काम होत आज,असे कधीही म्हणत नाही असे दिवसानुदिवस करतांना त्याचा अनुभव वाढत जातो. मित्र परिवार वाढत जातो आणि व्यवसाय करण्यात अधिकाअधिक आंनद येत राहतो. व्यवसाय करतांना पैसे मिळविणे अर्थातच महत्वाचे असते. पैसे मिळविण्यात उत्तम,मध्यम,आणि निच असे प्रकार असतात. चो–यामा–याकरून,खुन दरोडे,शेअर बाजारात लबाळया अडवगुक करून पैसे मिळविणे निच प्रकार समाजात अशाप्रकारे मिरविणारे अनेक लोक असतात. त्यांनी कसे वागावे हा त्यांचा प्रश्न आहे. असे वागुन मजा येत असेल. असे मात्र वाटत नाही. फक्त पैसाकडे लक्ष वेघुन भावभावंनाना थारा न देता पण

BW

कोणतेही गेरव्यवहार न करता पैसे मिळविणे हा मध्यमप्रकार समाजातील बहुतांश लोक अशा प्रकारे व्यवसाय करत असतांत तर पैसे मिळविण्याठी वासनाशुन्य प्रयत्न करतांना यदच्छेने जे पैसे मिळतील ते जोळत जाणे हा उत्तम प्रकार व्यवसाय करतांना या गोष्टीचे भान असेणे आवश्यक असते.

उत्तम व्यावसायीक हा उत्तम विघार्थी असतो तो सतत शिकत असतो. त्याला कोणतेही काम करतांना कष्ट तर वाटतच नाही. पण ते काम पुर्ण केल्यावर तो काहीतरी शिकलेला असतो. तो कोणाकडुनही शिकतो.

कोणत्याही व्यवसायाचे ग्राहक आणि विक्रेता असे दोन भाग असतात. काही सेवा विकतात. तर काही वस्तु विकतात. आपण प्रत्येक जण कधी ग्राहक तर कधी विक्रेते असतो. विक्रेत्याने ग्राहकांना लुबाळणे अगर ग्राहकाने विक्रेत्याला ओरवाळणे सारखेच दुःखकारक असते. कोणत्याही देवाण–घेवाणीनंतर दोघांनाही समाधान हवे. हे समाधान आंनदाने व्यवयाय करणारे लोक देउुही शकतात आणि घेउुही शकतात.

आयुष्याच्या अखेरीस आंनदाने उत्तम व्यवसाय केलेले लोक सत्पुरूष म्हणुन गणले जातात. त्यांचा शब्द म्हणजे नियम होतो. त्यांनी दिलेला सल्ला आणि संतवचन यात काही फरक उरत नाही. ते कर्मयोगी होउुन जातात. एक आंनदाने केलेला 'व्यवसाय' शेवटी गोड व्हावा.

उघोजक असेणे किंवा व्यवसाय असणे ही एक मोठी भावना आहे, ते तुम्हांला मालकीची भावना देते आणि तुम्हांला ते करू देते. ज्याबददल तुम्हांला खरोखर उत्कटता आहे. छोटया व्यवसायांसाठी किंवा स्टार्ट–अपसाठी अनुकुल व्यवसाय लॅडस्केप असल्याने आजकाल तुम्हांला मोठया भांडवलाची काळजी करण्याची गरज नाही.असे म्हटले जात आहे की, भारतात लहान व्यवसाय सुरू करणे हा एक रोमांचक उपकम असला तरी अनेक नवोदित उघोजकासाठी तुम्हांला कोणता व्यवसाय स्थापित करायचा आहे. आणि आर्थीक पैलु हा एक मोठा अडथळा ठरू शकतो. तथापि चांगली बातमी अशी आहे की, अशा अनेक लहान व्यवसाय कल्पना आहेत ज्यांना कमीत कमी गुंतवणुकीची आवश्यकता आहे आणि दिर्घकाळ फायदेशीर ठरू शकतात.

सतत बदलाा–या बाजारपेठाच्या तोळांवरही उघोजकांची भावना तेजस्वीपणे जळते 2024 हे तुमचे चमकण्याचे वर्षे आहे. पण आजुबाजुला अनेक ''व्यवसाय कल्पना'' फिरत असतांना कुठुन सुरवात करावी हे कळणे कठीण आहे. 2024 पेक्षा जास्त व्यवसाय कल्पनेची यादी तयार केली आहे ती तुमची आवड प्रज्वलीत करू शकतात आणि तुमची स्वप्ने नफयात बदलु शकतात तुम्ही टेक व्हिज किंवा स्थानिक उस्ताद असंग्लन तरीही या सुचिमध्ये प्रत्येकासाठी काहीतरी आहे 1) पेट्रोल पंप 2) फार्मसी 3) किराणा दुकान 4) सुलन / स्पा 5) भु–संपत्ती 6)फिलान्स सेवा 7) ट्रॅव्हल एजन्सी 8) करिअर सेवा 9) क्लाउुड किचन 10) वैयक्ति भेट वस्तु व्यवसाय 11) आर्थिक नियोजन 12) बेकरी सेवा 13) सल्ला सेवा 14) डेकेअर सेवा 15) भर्ती सल्लागार सेवा 16) टेलरीग 17) विमा एंजटसेवा 18) ट्रान्सक्रिप्शन सेवा 19) वेडिंग ब्युरो 20) टॅरो / ज्योतिष सेवा 21) ऑनलाईन सर्वक्षण 22) हॅड–लेटरिंग आणि कॅलिग्राफी

BW

22) कुत्रा पालणे सेवा 23) हॅन्डीमन सेवा 24) कार्यक्रमाचे नियोजन सहाय्य 25) वृध्दव्यक्तीची काळजी घेणे 26) कच्चा एंट्री नोक–या 27) डेटाएंट्री 28) ऑनलाईन शिकवणी 29) सोशल मीडीया व्यवस्थापन 30) आभासी सहाय्य 31) सामग्री तयार करणे 32) सलंग्ल विपणन 33) ऑनलाईन अभ्यासक्रम 34) ग्रॅफीक डिझाइन सेवा 35)डिजिडल मॉकेटिंग सेवा 36) व्हर्च्यअल इव्हेंट होस्टीगं 37) अन्नट्रक 38) कॉफी शॉप /कॅफे 39) ज्युस बार 40) PF/vc फंड /गुंतवनंकदार 41) अक्षय उुर्जा 42) टिकाउु कपडे 43) cow working spaces 44) मोबाईल ॲप विकास 45) ग्रामीण ड्रोन वितरण 46) सोशल इम्पॅक्ट इन्हेस्टमेंट फंड 47) स्पेशॉलिटी बुटीक 48) हेल्थ आणि वेलनेस स्टोअर 49) घराची सजावट आणि सामान 50) गोरमेट फुड स्टोअर 51) पाळीव प्राणी पुरवठा स्टोअर 52) व्हिंटेज किंवा कन्साईमेंट शॉप 53) इलेक्ट्रानिक्स आणि गॅजेट स्टोअर 54) खेळन्याचे दुकान 55) कला पुरवठा स्टोअर 56) आउुटडोअर आणि ॲडव्हेअर स्टोअर 57) पुनरवापर वस्तु 58) जपुण ठेवते /पापड/लोणचे 59)सेंद्रिय वैयक्तिक काळजी /सौदर्य प्रसाधने 60) मॉडयुलर फर्निचर 61) पॅकेजिंग मटेरिअल मॅन्युफॅक्चरीगं 62) अन्न प्रक्रीया 63) अगरबत्ती उत्पादन 64) पेय उत्पादन 65) लाकडी खेळणी बनविने 66) डेअरी/फ्रोझन ट्रेडर्स मॅन्युफॅक्चरींग 67) डान्स स्टुडिओ 68) योगा स्टुडिओ 69) तुमचा जागा भाडयाने 70) आपली कार भाडयाने 71) सायकल भाडयाने दया 72) उपकरणे भाडयाने 73) पार्टी भाडयाने 74) पोषाख भाडयाने 75) लग्नाचे पोषाखा भाडयाने 76) वस्तु वाहतुक 77) शहर दुर मागदर्शक 78) ड्रांपशिपीग व्यवसाय 79) बेड–एन–ब्रेकफास्ट 80) वैयक्तिक खरेदी सेवा 81) समुपदेशन सेवा 82) वितरण सेवा 83) चालक सेवा 84) वैयक्तिक शेफ 85) हस्तनिर्माण कला/शिल्प 86) फोटोग्राफी सेवा 87) भाषा अनुवादक 88) मेकअप आणि स्टाटुलिंग सेवा 89) घरगुती नुतनीकरण सेवा 91) पुरातन वस्तुचा व्यवसाय 92) कुत्रिम दागीणे बनविणे 93) टुट पार्लर 94) सबक्रिप्शन बॉक्स सेवा 94) साबुन बनवीणे 95) मेनबत्ती बनविणे 96) मोठया प्रमाणात खरेदीकरा किरकोळ विक्री करा 97) नास्ता/स्नॅक /टेकअवे काउुन्टर 98) रोटी/चपाती बनविण्याचा व्यवसाय

जीवनात कधीतरी आपल्या सर्वांना स्वतःला व्यवसाय करण्याची इच्छा असते. येथे अनेक व्यवसाय कल्पना सामयिक केल्या आहेत. ज्यातुन तुम्ही निवळु शकता. यशस्वी म्हणुन ओळखल्या जाणा–या व्यावसायीक कल्पनातुन भांडवल केंद्रित साध्या अर्धवेळ नोक–यापर्यंत तुम्ही तुमच्या शेडयुलमध्ये सामावुन घेउु शकणारे अनेक पर्याय शोधु शकता.

नोकरीच्या पाठीमागे न लागता तरूणांनी छोटया–मोठया व्यवसायाकडे वळावे. व्यवसाय ही उत्तम संधी आहे. छोटयाशा व्यवसायातुन परीश्रम,चिकाटी आणि सातत्य याच्या जोरावरच भविष्यात मोठया उपयोग निर्माण केला जाउु शकतो. यामधुन स्वतः बरोबरच देशाचाही आर्थिक प्रगतीमध्ये भर घालता येतो. थेट उत्पादन उत्पादन प्रक्रीयेत न उतरता प्रथम मार्केटिंगमध्ये अनुभव घ्यावा.त्यानंतर उत्पादन यशस्वी होउु शकते. तरूणांनी नोकरीच्या पाठीमागे न लागता व्यवसाय करावा मात्र त्यासाठी योग्य निवड आणि परिश्रम हे हवेतच.

BW

व्यवसाय म्हणजे काय?
व्यवसायाची व्याख्या, व्यवसायाचा अर्थ

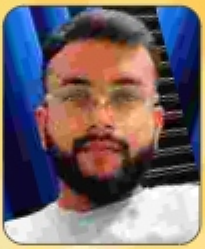

Abhishek Kavita Prakash Govindwar
MBA, Digital marketing Strategist
Working in Mumbai, MNC

व्यवसाय म्हणजे काय?

'व्यवसाय' हा 'व्यस्तपणा' पासून येतो, याचा अर्थ एखाद्या क्रियाकलापात गुंतलेला असतो. सोप्या भाषेत, व्यवसाय म्हणजे कमी किमतीत एखादी वस्तू विकत घेणे आणि जास्त किंमतीत विकणे. या खर्चातील फरक म्हणजे नफा. टोमॅटो 100 रुपये किलोने विकत घेणे आणि 120 रुपयांना दुसऱ्या बाजारात विकणे हे एक साधे उदाहरण आहे; तुम्हाला प्रति किलो नफा म्हणून 20 रुपये मिळतात. व्यवसायाचे प्राथमिक उद्दिष्ट नफा हे आहे आणि ते याच ध्येयाने चालते.

परंतु, अधिक स्पष्टपणे परिभाषित करण्यासाठी, 'व्यवसाय हा असा कोणताही व्यवसाय आहे ज्यामध्ये विक्रीसाठी वस्तूंचे उत्पादन करणे किंवा खरेदी करणे आणि ग्राहकांना त्यांच्या गरजा पूर्ण करण्यासाठी त्यांना विकण्यापूर्वी नफा मार्जिन जोडणे याशी संबंधित सर्व क्रियाकलाप समाविष्ट आहेत.' उदाहरणांमध्ये सेवांची तरतूद आणि वस्तूंचे उत्पादन आणि विक्री यांचा समावेश होतो.

मुख्य मुद्दा असा आहे की व्यवसायाचे उद्दिष्ट नफ्याचे असले तरी ग्राहकांच्या गरजा पूर्ण करून ते हे साध्य करते. व्यवसायामध्ये कोणताही व्यवसाय समाविष्ट असतो जेथे लोक उत्पादन, खरेदी, विक्री किंवा इतरांच्या गरजा पूर्ण करण्यासाठी वस्तू किंवा सेवांची देवाणघेवाण करून उत्पन्न मिळवतात, सर्व काही नफा मिळवण्यासाठी.

व्यवसायाची वैशिष्ट्ये :

आर्थिक क्रियाकलाप - व्यवसाय हा आर्थिक परतावा निर्माण करणारा आर्थिक क्रियाकलाप असावा. उदाहरणार्थ, शुल्कासाठी वाहतूक सेवा प्रदान करणे आर्थिक क्रियाकलाप म्हणून पात्र ठरते.

उत्पादन किंवा व्यापार - व्यवसाय एकतर नफ्यासाठी विकण्यासाठी वस्तू तयार करतात किंवा खरेदी करतात. ते वाहतूक, हाऊसकीपिंग आणि सुरक्षा यासारख्या वस्तू आणि सेवांचे उत्पादन किंवा खरेदी करण्याशी संबंधित क्रियाकलापांमध्ये गुंतलेले आहेत.

विक्री किंवा एक्सचेंज - उत्पादन किंवा खरेदी केल्यानंतर, पुढील पायरी म्हणजे उत्पादन किंवा सेवा विकणे. यामध्ये ते बाजारपेठेत ऑफर करणे आणि खरेदीदार आणि विक्रेते यांच्यातील व्यवहार पूर्ण करणे समाविष्ट आहे.

BW

तुमचा व्यवसाय ऑनलाइन कसा घ्यावा?

तुमचा व्यवसाय ऑनलाइन हलवल्याने गोष्टी चालू ठेवण्यासाठी आवश्यक असलेली कमाई होऊ शकते. तुमच्या वीट-आणि-मोर्टार शॉपचे उत्कर्ष ऑनलाइन व्यवसायात रूपांतर करण्यात तुम्हाला मदत करण्यासाठी, येथे काही कारवाई करण्यायोग्य पायऱ्या आहेत :

• एक व्यावसायिक वेबसाइट तयार करा :

तुमची वेबसाइट तुमच्या व्यवसायाच्या ऑनलाइन उपस्थितीचा पाया आहे. ते व्यावसायिक आणि वापरकर्ता-अनुकूल असल्याची खात्री करा. बरेच लोक स्मार्टफोन आणि टॅब्लेटवर ब्राउझ करत असल्याने ते मोबाइल डिव्हाइससाठी ऑप्टिमाइझ करा. उच्च-गुणवत्तेच्या प्रतिमा आणि स्पष्ट, संक्षिप्त भाषा वापरा. तसेच, एक डोमेन नाव खरेदी करा, आदर्शपणे .म्दस विस्तारासह, कारण ते सर्वाधिक ओळखले जाते.

• तुमचा ब्रँड तयार करण्यासाठी सोशल मीडिया वापरा :

सोशल मीडिया तुमचा ब्रँड तयार करण्यात आणि ग्राहकांना गुंतवून ठेवण्यात मदत करते. तुमच्या व्यवसायाला अनुकूल असे प्लॅटफॉर्म निवडा आणि तुमचे अनुसरण वाढवण्यावर लक्ष केंद्रित करा. तुमच्या प्रेक्षकांसोबत माहितीपूर्ण, मनोरंजक आणि संबंधित सामग्री शेअर करत रहा. आपल्या अनुयायांसह व्यस्त राहण्यासाठी टिप्पण्या आणि संदेशांना त्वरित प्रतिसाद द्या.

• डिजिटल मार्केटिंगमध्ये गुंतवणूक करा:

डिजिटल मार्केटिंग टूल्स तुम्हाला तुमच्या वेबसाइटवर जास्त रहदारी आणण्यात मदत करतात. शोध इंजिन ऑप्टिमायझेशन (SEO) मध्ये गुंतवणूक करा, pay-प्रति-क्लिक जाहिरात (PPC), आणि ईमेल विपणन. प्रत्येक रणनीतीचे फायदे आहेत आणि ते तुमच्या व्यवसायाच्या गरजेनुसार तयार केले जाऊ शकतात.

• एक निर्बाध ऑनलाइन खरेदी अनुभव ऑफर करा :

उत्पादने किंवा सेवा ऑनलाइन विकत असल्यास, तुमची वेबसाइट आणि चेकआउट प्रक्रिया समजण्यास सोपी असल्याची खात्री करा. तुम्ही एकाधिक ऑफर करता हे देखील सुनिश्चित करा payक्रेडिट कार्ड आणि डिजिटल वॉलेटसह सहू पर्याय. स्पष्ट शिपिंग आणि रिटर्न पॉलिसी प्रदान करा.

• आपले सेट अप करा Pay म्हणणे :

ऑनलाइन विक्री सुरू करण्यासाठी, तुम्हाला स्वीकारणे आवश्यक आहे pay ग्राहकांकडून सूचना. एकाधिक ऑफर करा pay तुमच्या साइटवर सहू पर्याय. बहुतेक वेबसाइट प्लॅटफॉर्म भिन्न समाकलित करण्याची परवानगी देतात payment गेटवे, काही ऑफर ऑल-इन-वन पॅकेजेससह ज्यांना व्यापारी खात्याची आवश्यकता नाही.

• वैयक्तिक अनुभवांद्वारे ग्राहक निष्ठा निर्माण करा :

ग्राहक निष्ठा निर्माण करण्यासाठी वैयक्तिकरण ही गुरुकिल्ली आहे. वैयक्तिकृत अनुभव तयार करण्यासाठी ग्राहक डेटा वापरा, जसे की सानुकूलित उत्पादन शिफारसी आणि अनुकूल ईमेल विपणन मोहिम.

BW

इंजिनियरिंग क्षेत्रातील रोजगार उपलब्धता

- प्रा. डॉ. गणेश दिगांबरराव गोविंदवार, यवतमाल
BE, ME and PhD. in Information Technology.
ट्रेनिंग अँड प्लेसमेंट ऑफिसर, सिपना अभियांत्रिकी व तंत्रज्ञान महाविद्यालय, अमरावती

इंजिनियरिंग क्षेत्रातील रोजगार उपलब्धता अनेक घटकांवर अवलंबून असते, जसे की कोणत्या शाखेची (डिसिप्लिन) निवड केली आहे, तांत्रिक कौशल्य, प्रोजेक्ट्स आणि अनुभव. इंजिनियरिंगमधील काही प्रमुख शाखा आणि त्यातील रोजगाराची स्थिती खालीलप्रमाणे आहे.

1. सॉफ्टवेअर इंजिनियरिंग : ● रोजगाराची स्थिती : सध्या IT आणि सॉफ्टवेअर क्षेत्रात मोठ्या प्रमाणात रोजगार उपलब्ध आहेत. अनेक स्टार्टअप्स आणि मोठ्या IT कंपन्या तंत्रज्ञांना नोकऱ्या देत आहेत. **● कौशल्ये आवश्यक :** प्रोग्रामिंग (जसे की C++, Java, Python), डेटा सायन्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजन्स, मशीन लर्निंग.

2. मेकॅनिकल इंजिनियरिंग : ● रोजगाराची स्थिती : भारतातील उत्पादन क्षेत्रात रोजगार उपलब्ध आहेत, विशेषतः ऑटोमोबाइल, एरोस्पेस, आणि ऊर्जा क्षेत्रांमध्ये.

● कौशल्ये आवश्यक : CAD/CAM, मशीन डिझाइन, 3D प्रिंटिंग, आणि इंडस्ट्रियल ऑटोमेशन.

3. सिव्हिल इंजिनियरिंग : ● रोजगाराची स्थिती : बांधकाम, इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रकल्प आणि रिअल इस्टेट क्षेत्रात चांगली मागणी आहे. सरकारी आणि खाजगी दोन्ही क्षेत्रांमध्ये रोजगार आहेत. **● कौशल्ये आवश्यक :** AutoCAD, Structural Analysis, प्रकल्प व्यवस्थापन (Project Management).

4. इलेक्ट्रिकल आणि इलेक्ट्रॉनिक्स इंजिनियरिंग : ● रोजगाराची स्थिती : ऊर्जा, उत्पादन, आणि इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्रातील मोठ्या कंपन्यांमध्ये नोकऱ्यांची संधी आहे.

● कौशल्ये आवश्यक : सर्किट डिझाइन, VLSI, Embedded Systems, सोलर आणि अन्य हरित तंत्रज्ञान.

5. केमिकल इंजिनियरिंग : ● रोजगाराची स्थिती : फार्मास्युटिकल्स, खाद्य प्रक्रिया, पेट्रोलियम आणि पर्यावरण तंत्रज्ञान क्षेत्रात रोजगार.

● कौशल्ये आवश्यक : प्रॉसेस इंजिनियरिंग, HAZOP, इंडस्ट्रियल सेफ्टी.

6. बायोटेक्नॉलॉजी इंजिनियरिंग : ● रोजगाराची स्थिती : आरोग्य, औषध निर्माण, जैवतंत्रज्ञान उद्योगात रोजगार आहेत. विशेषतः संशोधन आणि विकास क्षेत्रात संधी.

कौशल्ये आवश्यक : बायोप्रोसेस टेक्नॉलॉजी, जेनेटिक इंजिनियरिंग, क्लिनिकल रिसर्च.

7. एरोनॉटिकल आणि एरोस्पेस इंजिनियरिंग : ● रोजगाराची स्थिती : विमानचालन क्षेत्रातील संशोधन, डिझाइन, आणि उत्पादन क्षेत्रात संधी आहेत. ISRO, DRDO सारख्या संस्थांमध्ये चांगल्या नोकऱ्या उपलब्ध आहेत.

● कौशल्ये आवश्यक : विमान डिझाइन, फ्लुइड डायनॅमिक्स, आणि एव्हियोनिक्स.

इंजिनियरिंग क्षेत्रात रोजगाराची उपलब्धता सध्या चांगली असली तरी, सतत आपली कौशल्ये अद्ययावत ठेवणे आणि नवीन तंत्रज्ञान शिकणे आवश्यक आहे.

BW

समाजातील एकता : प्रगती चालविणारी शक्ती

प्रा. डॉ. सुयश यशवंतराव मुल्लेमवार
सहा. प्राध्यापक व विभाग प्रमुख (भौतिकशास्त्र विभाग)
डी. डी. भोयर कला व विज्ञान महाविद्यालय, मौदा,
जि. नागपूर, मो. क्र.- 8888858522

एकता हा पाया आहे ज्यावर मजबूत समाज बांधला जातो. ही अशी शक्ती आहे जी व्यक्तींना, वंश, धर्म, संस्कृती आणि पार्श्वभूमीच्या भेदांच्या पलीकडे जाऊन, समान उद्दिष्टांच्या दिशेने कार्य करण्यासाठी बांधते. आव्हानांनी भरलेल्या जगात, समाजातील एकता केवळ महत्त्वाची नाही - ती प्रगती आणि शांततेसाठी आवश्यक आहे .

जेव्हा लोक एकत्र येतात तेव्हा ते त्यांची सामूहिक शक्ती वाढवतात. आर्थिक अडचणी, राजकीय अशांतता किंवा सामाजिक समस्या असोत, संकटांना तोंड देण्यासाठी एकसंघ समाज अधिक लवचिक असतो. एकता व्यक्तींना एकमेकांना आधार देण्यास, संसाधने सामायिक करण्यास आणि त्यांना भेडसावणाऱ्या समस्यांच्या निराकरणासाठी सहयोग करण्यास सक्षम करते. सहकार्याने अशक्य वाटणारी गोष्ट साध्य होते.

एकता आपुलकी आणि समुदायाची भावना देखील वाढवते. जेव्हा लोक एकमेकांशी जोडलेले वाटतात, तेव्हा ते त्यांच्या स्वतः च्या हितासाठीच नव्हे तर सामूहिक हितासाठी काम करण्याची अधिक शक्यता असते. सामायिक हेतूची ही भावना एक सकारात्मक चक्र तयार करू शकते, जिथे प्रत्येक व्यक्तीचे यश संपूर्ण समुदायाच्या यशात योगदान देते. या बदल्यात, यामुळे परस्पर आदर आणि विश्वासाचे वातावरण निर्माण होते, जे कोणत्याही समाजाच्या दीर्घकालीन स्थिरतेसाठी आवश्यक असते.

शिवाय, एकसंध समाज विविधता आशण समावेशाला प्रोत्साहन देतो. भिन्न दृष्टिकोन आणि पार्श्वभूमी स्वीकारून, एकता विचारांची समृद्ध देवाणघेवाण जोपासते जे नवकल्पना, सांस्कृतिक वाढ आणि सामाजिक समरसतेला चालना देते. जेव्हा व्यक्तींना मूल्यवान आणि स्वीकारले जाते असे वाटते, तेव्हा ते त्यांच्या कलागुणांचे आणि सामान्य चांगल्यासाठी प्रयत्नांचे योगदान देण्याची अधिक अशक्यता असते.

शेवटी, एकतेची शक्ती आव्हानांना संधीमध्ये रूपांतरित करण्याच्या क्षमतेमध्ये असते. प्रत्येक समाजात, जेव्हा लोक सामायिक दृष्टी आणि समान मूल्यांसह एकत्र उभे राहतात, तेव्हा ते प्रगती आणि समृद्धीची क्षमता उघडतात.समाजाची ताकद त्याच्या विभागणीत नाही तर त्याच्या एकात्मतेत असते.

BW

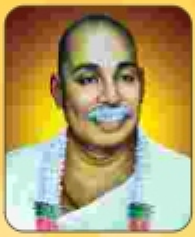

विषय- अध्यात्म

।। श्री गुरूदेव ।।

तुकड्यादास म्हणे मानवता, हीच आमुचि विश्वदेवता.

- **नंदु टिपणवार**, गुरूदेव प्रेमी समाज बांधव

भ्रमणध्वनी - ९९६०१३३६२०

सावंगी पेरका, ता. राळेगांव जि. यवतमाळ, ह.म.काळे ले आऊट, राळेगाव

वंदनिय राष्ट्रसंत श्री तुकडोजी महाराज यांचा जन्म दिनांक ३० एप्रिल १९०९ रोजी अमरावती जिल्ह्यातील सावली या गावी ठाकुर दाम्पत्याच्या पोटी झाला. त्यांच्या आईचे नांव मंजुळाबाई व वडीलांचे नांव बंडोजी पंत होते. "संत कृपा झाली, इमारत फळा आली". या ओळी प्रमाणे महाराजांची शरीरयष्टी होती. त्यांचे शरीर सर्व इश्वरी शुभ चिन्हांनी परीपूर्ण होते. "है विश्वयोग इसका, विश्वात्म देव इसका " या ऊक्ती प्रमाणे हे संपूर्ण विश्व माझेच आहे. असे समजून महाराजांनी समाज उत्थानाचे कार्य केले.

त्या काळात समाजामध्ये स्पृश्य-अस्पृश्यतेचा खुप प्रघात होता. तेव्हाचा समाज जाती-जातीत, धर्मात विखुरला होता. महाराजांना हे मान्य नव्हते. त्यांना सर्व माणसे एकाच देवाची लेकरे आहेत असा समज असलेला माणूस पाहीजे होता. ह्या रूढी परंपरेवर महाराजांनी भजनातून प्रहार केला. ते म्हणत - चाहे भंगी हो या ब्राह्मण नहीं पुछेंगे जाती। हम तो सद्गुण के साथी।

महाराजांनी भजन आणि भाषणाच्या माध्यमातून समाज सुधारणेसाठी पूर्ण देश भ्रमण केला. इतकेच नाही तर परदेश दौरे ही केले. कोणत्याही जाती धर्माला दुखवून भजन अथवा भाषणे करणे हा महाराजांचा स्वभाव नव्हता. लोक संग्रह व्हावा, लाखोंना एकाच वेळी प्रबोधन व्हावे. यासाठी त्यांनी त्यांनी गावागावात-प्रांताप्रांतात भ्रमण केले. त्यांनी आरती मंडळाची स्थापना केली आणि त्याद्वारे समाजकार्य सुरू केले. नंतर त्यांनी १९३५ साली श्री क्षेत्र गुरूकुंज मोझरी येथे "श्री गुरूदेव धर्म सेवा मंडळाची" स्थापना केली.

पुढे याच माध्यमातून जीवनाचा सर्वांगिण विकास करणारी योजना "सामुदायिक प्रार्थनेच्या माध्यमातून समाजात प्रसारीत झाली. त्यामुळे समाजातील व्यसने, दुराचार, बुवाबाजी, अंधश्रद्धा इत्यादी कमी व्हायला लागली. प्रत्येक गावात गुरूदेव सेवा मंडळाची स्थापना झाली त्यामुळे गावात व्यायाम शाळा ग्रामोद्योग, साक्षरता, गोरक्षण यांचा प्रचार आणि प्रसार व्हायला लागला.

दि. ३० जानेवारी १९५४ रोजी राष्ट्रपती भवनात गांधी पुण्यतिथी च्या निमित्ताने तत्कालीन राष्ट्रपती डॉ. राजेंद्र प्रसाद यांनी महाराजांच्या भजनाचा कार्यक्रम आयोजित केला. त्यावेळेस महाराजांनी, "सब नेताओं में कर दे मिलन उँचा, ऊठा दे मेरा प्यारा वतन, हे भजन सादर केला. राष्टपती बाबु राजेंद्र प्रसादांसह मंत्रिमंडळातील सर्व मंत्री या भजनाने भारावून गेले आणि त्याच वेळी डॉ. राजेंद्र प्रसाद यांनी महाराजांना "राष्ट्रसंत ही पदवी बहाल केली. त्यानंतर पूर्ण आयुष्य महाराजांनी मानवतेसाठीच खर्ची घातले. ते म्हणतात -

है प्रार्थना गुरूदेव से यह स्वर्गसम संसार हो।

अति उच्चतम जीवन बने, परमार्थमय व्यवहार हो।।

ना हम रहे अपने लिये, हमको सभी से गर्ज हैं।

गुरूदेव यह आशिष दे, जो सोचने का फर्ज हैं।।

BW

झाडी पट्टीचा पेरकी समाज

लेखक - श्री भगवान विसनाजी नारदेवार
माजी अध्यक्ष पेरकी जनसंघम् विदर्भ.

आपल्याला झाड़ी पट्टी बद्दल छोटीसी माहिती देऊ इच्छीतो. गडचिरोली, चंद्रपूर, भंडारा हा विभाग (जिल्हा) झाडी पट्टी म्हणुन आपले नागपूर व यवतमाळ जिल्ह्याचे पेरकी बांधव म्हणायचे. त्याला मुख्य कारण झाड़ी म्हणजे जंगल. जंगलाला लागुन असलेला खेडे विभाग. तेथील बोली भाषा व राहणीमान थोडे वेगळे होते. 40-50 वर्षापुर्वी त्यांचा थेट संबंध नागपूर व यवतमाळच्या लोकांशी फार कमी प्रमाणात होता. त्यामुळे त्यांची बोलीभाषा ही मराठीच होती व काही प्रमाणात रामसागर, ठाकरी, कुणघाडा व आष्टी या भागात तेलगु भाषेचा वापर होता व अजूनही आहे. त्यामुळे तेथील मराठी भाषा व यवतमाळ नागपूर येथील वराडी पट्ट्यातील भाषा ही मराठीच होती. परंतु त्यात थोडासा बोलतांना वेगळा उच्चार निघत होता व म्हणून त्यांना झाडीपट्टीची मराठी भाषा अस म्हटल्या जात होत.

आपल्या महाराष्ट्रात सर्व भागात मराठीचा वापर होतो परंतु थोड्या थोड्या अंतरावर जसे अमरावती, अकोला येथे, नांदेड, औरंगाबाद, पश्चीम महाराष्ट्र येथे सांगली, सोलापूर, कोल्हापूर या भागात व मुंबई या भागात वेगळ्या उच्चारानी मराठी बोलल्या जाते.

फार पुर्वीपासून झाडी पट्टी भागात मुख्य धंदा (व्यवसाय) हा शेती करणे व शेतात मोल मजुरी करणे असल्यामुळे तेथील राहणीमान वेगळे होते. अलिकडे नागपूर सारख्या मोठ्या शहराच्या मुख्य प्रवाहात त्याचा संपर्क आल्यामुळे व शैक्षणिक प्रगती झाल्यामुळे आता आपल्या नागपूर-यवतमाळ जिल्ह्या सारखीच मराठी भाषा अलिकडे बोलायला लागले आहेत व राहणीमान सुद्धा बदलून नागपूर-यवतमाळ भागाप्रमाणेच सुधारलेला आहे.

झाडीपट्टीमध्ये शेतीचे काम वगैरे संपल्यानंतर होळी-संक्राती मध्ये बैलाचा पट वगैरे भरवणे व त्या निमित्ताने विरंगुळा म्हणून रात्री दंडार, तमाशे व नाटकाचे आयोजन पूर्वी करत होते आणि आताही आयोजन करतात. पूर्वी नाटक ज्या ज्या गावात होत होते. तिथे तेथीलच स्थानिक लोक नाटकामध्ये पात्र करायचे. तसी दोन महिन्यापासून तालिम करून नाटकांचे भुमिकेची तयारी करत होते. तसेच दंडार व तमाश्याचे सुद्धा तालीम करूनच तयारी करायचे व प्रत्यक्षात त्या कार्यक्रमात पात्र करायचे. अलिकडे नाटक पार्टी तयार झाल्या. मु.पो.ता. वडसा जिल्हा गडचिरोली येथे नाटकाचे प्रयोग करणारे अनेक संस्था निर्माण झाल्या व त्याना ठरवून नाटकांचे आयोजन केल्या जाते. अलिकडे तर मुंबई पूण्याचे नाटक पार्टी बोलावून नाटकांचे आयोजन केल्या जाते.

पेरकी समाज चंद्रपूर जिल्ह्यात प्रापर चंद्रपुरात, घुगूस, नदोरी, वरोरा, दुर्गापूर, बल्लापूर, राजूरा, गड्चांदूर, मांडवा, गोंडपिपरी, धाबा सकमूर, भंगाराम तड़ोधी, पानोरा, हरना, बोथली, सिंदेवाह, नवरगांव, निमगांव, तिफंद्रा, नागभीड-कोरगांव, ब्रम्हपुरी, निलंज, सोनेगाव ह्या सर्व गावांत बरेच पेरकी समाज राहते.

भंडारा जिल्ह्यात भंडारात कोरगांव, कुरन्डा, पवनी, ईटगांव, कुर्झा, कोरंगी, भोजापूर, बेलगाव, लाखांदूर, सोनी, अड्याळ, या गावांत सुद्धा बरेच परकी समाज राहते. तसेच गडचिरोली जिल्ह्यात गडचिरोली रई आणि बामनी, आरमोरी पोर्ला, देऊड़गांव, डोंगरगांव, उजेवारी, मायगाव, चामोर्शी तहसलि, रामसागर, आष्टी, ठाकरी, कुनघाड़ा गावात सुद्धा बरेच पेरकी समाज राहते.

BW

पोलिस विभाग के रियल लाइफ सिंघम एएसआई श्री राजेश तुकाराम पैडलवार !

नवभारत

विभाग के रियल लाइफ 'सिंघम' ASI पैडलवार

अब तक 700 से ज्यादा रिवॉर्ड

From pen to prison: How one cop's writ sealed fate of 1,000 criminals

उनके राष्ट्रपति पोलिस पदक से सम्मानित होने से संपूर्ण पेरकी समाज भी सम्मानित और गर्व महसूस कर रहा है।

लेखक : प्रकाश गणपतराव गोविन्दवार, नागपुर

केन्द्र सरकार ने असिस्टेंट सब स्पेक्टर श्री राजेश तुकाराम पैडलवार को राष्ट्रपति पोलिस पदक देकर सम्मानित किया है। पेरकी समाज के लिए यह बहुत ही सम्मान और गौरव की बात है। पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप नागपुर निवासी श्री राजेश तुकाराम पैडलवार जी को सब स्पेक्टर बनने पर और राष्ट्रपति पोलिस पदक प्राप्त करने पर हार्दिक बंधाई और शुभकामनाएं देता है।

समस्त पेरकी समाज के लिए बड़े गर्व और अभिमान की बात है कि उनका एक जाति बंधू की पहचान पोलिस विभाग में एक दबंग, सिंगम , इमानदार और चरित्रवान अधिकारी के तौर पर है। बहुत कम लोग सरकारी नौकरियों में इमानदारी और कर्मठता का तमगा पदक कमा पाते हैं !

पोलिस की पहचान एक बहुत खऱाब, खडूस, भ्रष्ट , अव्यवहारिक लोगों जैसी है। लोगों को डरा धमकाकर बात करने वाले करप्ट व्यक्ति के तौर पर है। वह पैसे लिए बगैर कोई काम नहीं करता है। परंतु ऐसे लोग बहुत थोड़े है। इन थोड़े लोगों की वजह से सारा पोलिस विभाग बदनाम है। अन्यथा डाक्टर , वकील से ज्यादा सेवा और पुण्य कार्य करने का काम पोलिस वालों के भाग्य में लिखा है।

सबसे कठीन परिस्थितियों में पोलिस विभाग काम करता है। ड्युटी का कोई समय और घंटे तय नहीं होते हैं। कोई त्यौहार की छुट्टी नहीं मिलती है। इसलिए पोलिस विभाग की नौकरी सबसे कठीन मानी जाती है। फिर भी पोलिस विभाग वह सम्मान पाने में असफल रहता है। पोलिस विभाग को काजल की कोठरी भी कहा जाता है। इस विभाग में बेदाग साबित होना मुश्किल काम है। ऐसे में बेदाग साबित होना श्री राजेश तुकाराम पैडलवार जी के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है।

श्री राजेश तुकाराम पैडलवार पढ़ें लिखे, पोस्ट ग्रेजुएट, सर्वाधिक पुरस्कार विजेता है। इसके बावजूद श्री राजेश तुकाराम पैडलवार जी को सब-सेक्टर के पद के दस साल इंतजार करना पड़ा है। दस साल पहले वे सब स्पेक्टर की परिक्षा मेरिट में पास किए थे। इससे आप अंदाजा लगा सकते है कि पोलिस विभाग अपने कर्मचारियों के साथ न्याय नहीं कर सकता है। दूसरों के साथ क्या न्याय करता होगा ?

BW

पेरकींना द्या भटक्या जमातीत स्थान

हक्कासाठी पुकारला दीर्घ लढा ; मटा सोशल कनेक्टमध्ये मांडल्या भावना

पेरकींना द्या भटक्या जमातीत स्थान

हक्कासाठी पुकारला दीर्घ लढा; 'मटा सोशल कनेक्ट'मध्ये मांडल्या भावना

तागापासून शेती करणारा समाज अशी पेरकी समाजाची ओळख आहे. पूर्वी आंध्रप्रदेश, चेन्नई याच प्रदेशात राहणारा समाज आज देशात वेगवेगळ्या भागात विखुरला आहे. नागपुरातही त्यांनी आपले स्थान बळकट केले आहे. प्रगतीची वाट धरणाऱ्या समाजाचा आजही म्हणावा तसा विकास झाला नाही. भटक्या जमातील स्थान मिळावे यासाठी दीर्घ लढा दिला. आजही या मागण्या कायम असून विकासाचा असमतोल दूर करण्यासाठी शासनाने पुढाकार घ्यावा, असे आवाहन पेरकी समाजबांधवांनी मटाच्या सोशल कनेक्ट उपक्रमात केले.

मटा सोशल कनेक्टच्या 89 व्या भागात पेरकी समाज संघटनेची वाटचाल, विधायक उपक्रम, भेडसावणाऱ्या समस्या आदी मुद्द्यांवर मंथन झाले. यावेळी डॉ. राम बोडेवार, भगवान नारदेलवार, प्रकाश गोविंदवार, गुलाब पैडलवार, सुरेश डोकेवार, चंदा बोडेवार, शैलजा डोकेवार, ममता डोकेवार, कविता गोविंदवार, डॉ. कीर्ती दोरसेतवार, रंजना प्यारमवार, शांता पंचलवार, गीता पैदलवार, राजू डोकेवार, देविदास जिड्डेवार, रमेश अंकतवार, दयानंद बुर्वेवार, अनिल मंचलवार, उमेश पायदलवार आदी समाजाचे पदाधिकारी आणि सदस्य उपस्थित होते.

'आपल्या देशातील विविध समाज संस्कृतीचे दर्शन घडविणारा 'महाराष्ट्र टाइम्स'चा 'सोशल कनेक्ट' हा विधायक उपक्रम आहे. प्रत्येक समाजाचा वैभवशाली इतिहास आहे. समाजाची संघर्षमय वाटचाल मांडणाऱ्या 'सोशल कनेक्टला नागपुरातील समाजबांधवांनी भरभरून प्रतिसाद दिला. जातीय विभागणी वा तंटे नव्हे, तर सामाजिक एकोपा साधणे, हा या उपक्रमाचा हेतू आहे. आपल्या हक्कासाठी संघटित झालेल्या आणि विविध सामाजिक विषयांवर लढा देणाऱ्या संघटनांनाही या उपक्रमात आता सहभागी करून घेतले जात आहे', अशा शब्दांत 'मटा'चे निवासी संपादक श्रीपाद अपराजित यांनी 'सोशल कनेक्ट'उपक्रमामागील भूमिका मांडली.

तागाची शेती करणारा समाज

-पेरकी हा प्राचीन शब्द आहे. तेलगू ग्रंथांमध्येही याचा उल्लेख आढळतो. नन्नय्या या तेलगू साहित्यिकाने या बाबत लिखाण केले आहे. पेरकी समाजाच्या अर्थाची उकल या ग्रंथात केली आहे.

-कालिदासाच्या कुमारसंभवम् या ग्रंथात पेरकी शब्दाचा उल्लेख आढळतो.

-ताग नावाची वनस्पती आहे. या तागापासून दोरी बनविली जाते. तागापासून तयार होणाऱ्या पहिल्या दोरीला पेरका असे म्हणतात. मुळात हा पेरिका असा शब्द आहे. यापासून पेरकी असा शब्द तयार झाला आहे.

-तागापासून गोण्या बारदाणा विणला जातो. यात तागाचा वापर केला जातो. तागाच्या झाडाला पूर्वी पेरू असे म्हटले जात होते. त्याच्या सालीला बोरू असे म्हणतात. याच तागाची शेती करणे हा पेरकी समाजाचा मूळ व्यवसाय आहे.

-या व्यवसायावरूनच या समाजाला पेरकी असे म्हटले जाते.

-या समाजाचे पूर्वज परशुरामकालीन क्षत्रीय होते. पूरगिरी क्षत्रीय असा उल्लेख ग्रंथांमध्ये आढळतो. समाजाचा पहिला मूळपुरुष वीरराजू आहे.

-भगवान परशुराम यांची आई रेणुका माता या पेरकी समाजाच्याच आहेत, असे समाजबांधव सांगतात.

-पेरकी समाजाचे आराध्य दैवत 'मल्लना' आहे आहे. तेलगूमध्ये शंकराचे नाव मल्लना असे आहे.

-पार्वतिला तेलगूमध्ये 'मडीगा' असे म्हणतात. माहुरची देवी पेरकी समाजबांधवांसाठी मोठे श्रद्धास्थान आहे.

-शेतातून नवीन धान्य आल्यानंतर समाजबांधव या धान्याचा नैवेद्य तयार करून देवाला अर्पण करतात. यालाच 'सटपूजा' असे म्हटले जाते.

-ही पूजा मार्गशिष महिन्यातील शनिवारी केली जाते. यासह हिंदू संस्कृतीनुसार साजरे होणारे सर्व सण मोठ्या उत्साहात समाजबांधव साजरे करतात.

-आंध्रप्रदेश, चेन्नई या प्रदेशात पूर्वी हा समाज मोठ्या प्रमाणात राहत होता. शिक्षण आणि व्यवसायानिमित्त देशाच्या वेगवेगळ्या भागात तो विखुरल्या गेला.

-जिल्ह्यात सुमारे तीन हजारपेक्षा अधिक पेरकी समाजबांधव राहतात. विदर्भात यवतमाळ, चंद्रपूर, गडचिरोली, भंडारा, गोंदिया या जिल्ह्यात त्यांचे वास्तव्य आहे. नांदेड जिल्ह्यातही पेरकी समाजाची संख्या मोठ्या प्रमाणात आहे.

-पारंपरिक व्यवसाय आज जवळपास लुप्त झाला आहे. काळानुसार उच्चशिक्षण घेऊन डॉक्टर, वकील, अभियंता, उद्योग अशा विविध क्षेत्रात समाजबांधव यशस्विरित्या काम करीत आहेत.

-इतर मागासवर्गीय म्हणजे ओबीसी मध्ये मोडणाऱ्या पेरकी समाजात बलीजा, कैवरे, जानाप्पन अशा पोटजाती आहेत. चेन्नई भागात या पोटजाती आढळतात.

-यवतमाळ जिल्ह्यात राळेगाव तहसीलमध्ये असलेले सावंगी हे गाव 'सावंगी पेरका' या

नावाने ओळखले जाते.

-मराठवाड्यात मुखेड हे तालुक्याचे ठिकाण आहे. तिथे आणि कामठीत पेरकी मोहल्ला आहे.

-समाजाची पेरकी जनसंघम विदर्भ नावाची नोंदणीकृत संघटना आहे. 1955 साली या संघटनेची स्थापना झाली.

-संघटनेच्या माध्यमातून परिचय मेळावे, गुणवंतांचे सत्कार, आरोग्य शिबिर यासह महिलांच्या आर्थिक सक्षमतेसाठी विविध उपक्रम राबविले जातात.

-यवतमाळ येथे गरजू विद्यार्थ्यांसाठी वसतिगृह चालविले जाते. अशाच स्वरूपाचे वसतिगृह नागपुरात तयार व्हावे यासाठी प्रयत्न सुरू आहेत, असे समाजबांधवांनी सांगितले.

मागण्यांसाठी संघर्ष आणि लढा

-पेरकी समजाचा भटक्या जमातीत समावेश करावा यासाठी मोठा लढा उभारला होता. 2004 मध्ये विधानभवनावर मोर्चाही काढण्यात आला होता.

-8 वर्षे आंदोलन केल्यानंतर शासनाकडून नेमलेल्या एका समितीने निर्णय देत समाजाला भटक्या जमातीतील स्थान नाकारले. त्यामुळे लढा काहीसा थंड पडला असला तरी मागणी कायम आहे, अशी भावना समाजबांधवांनी व्यक्त केली.

-अल्पसंख्यांक असलो तरी आम्ही समाजाचा महत्त्वाचा घटक आहे. त्यामुळे नागपुरात समाजासाठी समाजभवन तयार करण्यात यावे. विविध शासकीय पातळीवर यासाठी पत्रव्यवहार सुरू आहे.

-राजगारासाठी हा समाज नागपुरात आला, एका भागातून दुसऱ्या भागांत स्थानांतरित झालेल्या या समाजाला भटक्या जमातील स्थान मिळावे.

-आंध्रप्रदेशात या समाजाचा अनुसूचित जातीत समावेश आहे. हाच न्याय महाराष्ट्रातही लागू व्हावा.

-समाजातील काहींनी शिक्षणात प्रावीण्य मिळविले असले तरी मोठ्या प्रमाणात समाज शैक्षणिकदृष्ट्या मागासला आहे.

-विद्यार्थ्यांना शिक्षण घेण्यात अडचणी येऊ नये यासाठी नागपुरात जागा उपलब्ध करून देऊन वसतिगृह तयार करण्यात यावे. यासाठी शासनाने मदत करावी.

-समाजातील राजकीय नेतृत्व विकसित व्हावे यासाठी राजकीय पक्षांनी संधी द्यावी, असे आवाहन समाजबांधवांनी केले.

-ओबीसी जनगणना करण्यात यावी. जातिनिहाय जनगणना झाली तर समाजाची ताकद लक्षात येईल आणि यानुसार लाभ देता येईल.

विशेष धन्यवाद आणि आभार 'महाराष्ट्र टाइम्स', निवासी संपादक श्री श्रीपाद अपराजित, लेखक - प्रवीण लोणकर, नागपूर

BW

''पेरकी समाज : काल आणि आज'' या ग्रंथाच्या अंतरंगात

- डॉ. राम बोडेवार
9420300139

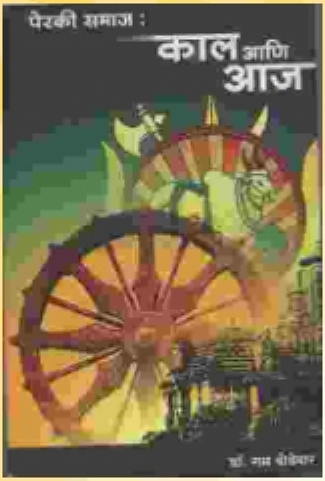

'पेरकी समाजः काल आणि आज' या ग्रंथ प्रकाशनाला (2008) सुमारे पंधरा वर्ष लोटले आहेत. या पंधरा वर्षांच्या कालावधीत समाजातील अनेकांनी सामाजिक-आर्थिक आणि शैक्षणिक दृष्ट्या महनीय प्रगती साधल्याचे दिसते. विशेषतः शैक्षणिक दृष्ट्या समाजातील अनेक तरूणांनी चांगली प्रगती केलेली आहे. पूर्वी उच्च शिक्षितांची संख्या बोटावर मोजण्या इतकीच होती. मात्र गेल्या दहा-पंधरा वर्षांच्या कालावधी मध्ये डॉक्टर्स, इंजिनिअर्स आणि प्रशासकीय सेवेतही चांगल्या हुद्यावर आपल्या समाजातील तरूणांनी आपला शिक्का उमटविण्यास सुरूवात केली आहे. विशेष म्हणजे तरूणीनीही यात नेत्रदीपक यश मिळविले आहे. शिक्षणाने त्यांच्या राहणीमानात लक्षणीय बदल झालेला दिसतो. त्यांची भरारी परदेशातही यश मिळविण्याच्या दिशेने होत आहे. हे आपल्या समाजाच्या कौटुंबिक आणि सामाजिक दृष्टीने अत्यंत 'समाधान आणि अभिमानाची बाब आहे.

ग्रंथ निर्मिती आधी माहिती मिळविण्यासाठी मी, जी भटंकती केली, तेव्हाच्या समाजात आणि आताच्या समाजात शैक्षणिक-सामाजिक दृष्ट्या खूप सकारात्मक बदल दिसतो, मात्र 'तुलनेने हा बदल समाजाच्या सर्वस्तरापर्यंत पोहचलेला दिसत नाही. त्यात आर्थिक आणि शैक्षणिक विषमता ठळकपणे नजरेला पडते. बहुजनाच्या इतर जाती प्रमाणे आपल्याही जातीत बेरोजगारी आणि व्यसनाधिनता प्रकर्षाने वाढीला लागल्याचे चित्र आहे. हे वेळीच नियंत्रणात आले नाही, तर मात्र त्याचे पुढील परिणाम अत्यंत विदारक ठरतील. हे मात्र नक्की. म्हणून समाजात ऐक्य अत्यंत गरजेचे आहे. समाज बांधवाना योग्य मार्गदर्शन करण्यासाठी समाज संघटनेने पुढाकार घेणे आवश्यक आहे. आपण नेहमी वैयक्तिक प्रगतीवर भर देतो, ते द्यायलाही हवेच मात्र आपल्या सोबत इतर गरजूनाही मदत करावी, त्यामुळेच समाज प्रगती साधल्या जाऊ शकते, हे सत्य त्यांनी विसरू नये.।

ग्रंथाच्या पुढील आवृत्तीच्या दृष्टीने माझी माहिती संकलनाची प्रक्रिया सुरू आहे. सर्व समाज बांधवांना आपल्या समाजाची माहिती सहज उपलब्ध व्हावी, या दृष्टीने माझा प्रयत्न आहे. मात्र 'पेरकी समाजः काल आणि आज' या ग्रंथातील माहितीचा सारांश रूपाने धांडोळा घ्यावा, जेणे करून समाज बांधवांना माहितीची उजळणी करून देता येईल असे, श्री प्रकाश गोविंदवार यांनी सुचविले. त्यासाठी हा लेखन प्रपंच!

पेरक्यांचे आदिपुरुष गिरीराजा
आणि पत्नी जगती देवी

मित्र हो, मुळातून वाचण्याचा जो आनंद असतो तो काही औरच असतो. या ग्रंथात जातीच्या पूर्वपीठिकेपासून तर उत्पत्ती, विकास, परंपरा, आडनाव, गोत्र विषयक उत्कंठावर्धक माहिती, समाजातील गणमान्य व्यक्तीची, संघटन विषयक कार्याची, प्रतीक चिन्हाची , भाषेची, अशी जवळ-जवळ सर्वच माहिती आली आहे. म्हणून आपण एकदा तरी हा ग्रंथ जरूर वाचावा असे मी आपणांस आवाहन करतो. या माहितीचा थोडक्यात धांडोळा असा -

प्रत्येकालाच आपल्या जाती-समाजा बद्दल निसर्गताच आपुलकी असते. तिच्या बद्दलची माहिती मिळविण्याचा प्रयत्नही होतो. ज्या जातीत आपण जन्मलो, ती जात कशी आहे? ती कशी उत्पन्न झाली, तिला तेच नाव कां मिळाले? तिचा पूर्वेतिहास काय आहे? या जातीत जन्माला आलेल्या काही कर्तबगार व्यक्तीमुळे ती सर्वज्ञात होण्यास मदत होते. किंबहुना यामुळे समाजाला ओळख मिळते. अशा एक ना अनेक गोष्टी जाणून घेण्याची उत्सुकता असते. त्याच उत्सुकतेपोटी मी आपल्या जाती-समाजाची माहिती गोळा करून त्यांचा संग्रह केला. त्याला आणखी एक महत्वाचे कारणही कारणीभूत आहे. मी शिक्षणासाठी जेव्हा आपले गाव सोडून शहरात गेलो, तिथे मी पेरकी असल्याचे सांगूनही त्यांना कळत नव्हते. असेल कोणी तरी! हे म्हणतांना त्यांच्या बोलण्यातून व्यक्त होणारा तुच्छतेचा भाव मला खटकत असे. हीच खंत मला वेळोवेळी अस्वस्थ करीत असे. त्यातूनच मला जाती बद्दल माहिती मिळविण्याची ओढ अधिक दृढ होत गेली. कालांतराने माहिती मिळविण्यात मी बऱ्याच अंशी यशस्वी झालो. हे आपणांस माझे पुस्तक वाचून अगदी सहज कळेल.

BW

पेरकी म्हणजे काय?

"पेरिका म्हणजे गोणपाट आणि त्यातून वस्तु-धान्य भरून व्यापार करणारे ते पेरिका (पेरकी)". मानववंश शास्त्रज्ञाच्या मते, सामान्यपणे एखादा समाज कोणते काम करतो, त्यावरून तो ओळखला जातो. आणि कालांतराने ते कामच त्याची जात होते. त्याला त्याच नावाने ओळख मिळते. उदा. बारा बलुतदोरांची ओळख पहा. लोहार, सुतार, धोबी, न्हावी इत्यादी. यांना मिळालेली जात ही त्यांच्या व्यवसायावरून मिळाली आहे. पेरकऱ्यांना मिळालेले नावही ते पूर्वी करत असलेल्या तागाच्या व्यवसायामुळेच मिळाल्याचे दिसते. तागाच्या तंतूपासून दोरी तयार करून त्यापासून गोणपाट, तरट, बारदाना सारख्या वस्तू तयार करण्याचे काम आपले पूर्वज करीत. एवढेच नव्हे तर तागाच्या उत्पादनापासून (शेतीपासून) त्या वस्तू तयार करून त्याची विक्री करण्यापर्यंतची पूर्ण प्रक्रिया ते पार पाडत असत. ताग बियाची लागवड-ताग-पेरकुंड-तरट आणि त्याची विक्री. त्यातल्या पेरकुंडावरून हळूहळू पेरका असे म्हटल्या जाऊ लागले. कालांतराने हीच त्यांची ओळख दृढमूल झाली. या पेरिका शब्दाबद्दल अनेक उपपत्तीही आहेत. पेरिका, पेरिके, पेरकी, पेर्के, पेर्का, पेर्की, पेरकेवाड इत्यादी. पेरकींच्या उपजातीही आहेत. किंबहुना पेरकी हीच बलिजाची पोटजात असल्याचे आढळते. तसेच पेरकींच्या आणखी जवळच्या पोटजाती म्हणजे कैवरे, जनप्पन, पेरिका बलिजा. या सर्व जाती बलिजाच्या उपजाती-पोटजाती असल्याचे कळते. आणखी एक महत्वाचा मुद्दा म्हणजे पेरक्यांना पुरगिरी क्षत्रिय असेही म्हटले जाते.

वीरामल्ल (हरमल्लू) आपल्या बंधूसह पेरिका शेट्टीचा वेश धारण करून देशाटनाला जातांना

पुरगिरी क्षत्रिय म्हणून ओळखले जाणारे हे पेरकीजन जन्माने क्षत्रिय होते. आताही कोर्ट दस्तावेजामध्ये, वाङमय-लोक साहित्यामध्ये पेरकी लोकांसाठी पुरगिरी क्षत्रिय असाच उल्लेख आढळतो. आजही आंध्रमधील हंसावरम्, तेटागुंटा तालुक्यातील पेरिका लोकांना पुरगिरी क्षत्रिय म्हणूनच संबोधले जाते.

बैलावर गंता टाकून व्यापारास निघालेले पेरिकावृत्ती धारी व्यापारी

BW

पेरकी मूळ कुठले?

इंग्रज शासन काळापूर्वी मद्रास-आंध्र संयुक्त प्रांत होता आणि सद्याचा तेलंगणा प्रांत म्हणजे निजाम संस्थान मूळचे हैदराबाद संस्थान होय. याच मद्रास प्रांतात पेरिकाजन राहत असल्याचे पुरवे मिळतात. 1891 व 1901 च्या जनगणना अहवालात या जातीची स्वतंत्र नोंद केलेली आहे. या भागात पेरिका, वस्ती करून राहत होते. एवढेच नव्हे तर त्यांच्या सांस्कृतिक, सामाजिक आणि आर्थिक स्थितीची माहितीही या अहवालातून मिळते. उस्मानिया विद्यापीठाच्या ग्रंथालयात ही सर्व माहिती जनगणना अहवाल आजही सुस्थितीत सापडतात. विशेष म्हणजे कमिशनर दर्जाच्या शासकीय अधिकाऱ्यांनी ती दिलेली असल्याने ती अधिकृत आणि प्रमाणित समजायला हरकत नाही. इथून पेरकी जात, त्यांची संस्कृती, जीवनमान, त्यांचे उद्योग-उपजीविका इत्यादी महत्वाची माहिती उपलब्ध होते.

मग पुढे मद्रास प्रांत, तामिलनाडू झाला. निजाम स्टेटचे (हैद्राबाद संस्थान) विलिनीकरण आंध्रात झाले. निजाम स्टेट मधील नांदेड जिल्हा महाराष्ट्राला जोडला गेला. तर सद्याचा राजुरा तहसिल निजाम स्टेट मधून चंद्रपूर जिल्ह्याचा भाग झाला. अशाप्रकारे राजकीय फेरफार झाल्यामुळे पेरकीजनही तसेच विभागल्या गेले. काहीनी स्थलांतर केले. मद्रास-आंध्र-तेलंगणा आणि लगतच्या महाराष्ट्रात त्यांनी स्थलांतर केले. स्थलांतरण झाले. त्यात प्रामुख्याने तेलंगणा महाराष्ट्र सीमा भागात झालेले स्थलांतरण ठळकपणे जाणवते. यात सद्या गडचिरोली (पूर्वीचे चंद्रपूर) तील आष्टी, ठाकरी, कुणघाडा, रामसागर, चामोर्शी, हरंबा, डोंगर गाव, आरमोरी इ. गावामध्ये आपल्या मातृभाषेसह आज ही वास्तव्यास आहेत. काही भंडारा जिल्ह्यात गेले. तसेच चंद्रपूर जिल्ह्यातील चंद्रपूर, नवरगाव, सिंदेवाही, निमगाव-निफंद्रा, धाबा, सकमूर, गोंडपिपरी, भंगाराम तळोधी कोटगाव, सोबत भंडारा जिल्ह्यात पवनी, कुर्झा, भोजापूर, ईटगाव, सावरला, कोरंबी इत्यादी गावात स्थलांतरित झाले. विशेष म्हणजे भंडारा-गडचिरोलीतील काहीजण कामठी नागपूर कडे जाऊन शहरालगतच्या ठिकाणी स्थिरावले. ही स्थलांतरणाची प्रक्रिया संथ मात्र अव्याहतपणे सुरू आहे. इकडे यवतमाळ-आदिलाबाद सीमेलगतच्या अनेक गावामध्ये यांनी आपले बस्तान मांडले आहे. त्यात पैनगंगेचा काठ महत्वाचा यात चनाखा, पाटणबोरी, सुन्ना, टेंभी, सुसरी, ढोकी, वांजरी, पांढरकवड्या पर्यंत पुढे उमरी, किन्ही, रूंझा, कोची, घाटउंबा, तिकडे घाटंजी, बेलोरा, मानोली पर्यंत इकडे झरी तालुक्यात धानोरा, लिंगती, हिरापूर, मांगली, मुकूटबन इत्यादी ठिकाणी हा समाज स्थिरावला. अजूनही तेलंगणातील अनेक ठिकाणी यांचे नातेसंबंध दृढमूल आहेत.

पेरकींची भाषा कोणती?

पेरकी जनांची मूळ भाषा तेलुगू होती. पुढे स्थलांतरणांमुळे मूळभाषेत बदल घडत गेला. मुळात मद्रास-आंध्र संयुक्ततेमुळे तमिल आणि तेलुगू चा मेळ होता. पुढे मूळ

तेलुगू आणि नंतरच्या निजामस्टेट मधील उर्दू भाषेचा प्रभाव पडत गेला. त्यामुळे पूर्वीची तेलुगू -उर्दू मिक्स होत गेली. आज तर आंध्र-तेलंगणातील भाषा ही फार मोठ्या प्रमाणात अपभ्रंशीत होत जाऊन तिने आपले मूळ स्वरूपच घालविले आहे. आणि महाराष्ट्रात स्थिरावलेल्या पेरकींची मूळ भाषा जाऊन त्यांनी महाराष्ट्राची मातृभाषा मराठी आत्मसात केली आहे. याही पुढे जाऊन ही मराठी, हिंदी-उर्दू आणि इंग्रजी मिक्स होऊन एका नवीनच रूपात प्रचलीत होत आहे. हे विशेष !

प्रथा, परंपरा आणि संस्कार -

आपल्या देशात अनेक संस्कृतीचा संगमच आहे. तरी विविध जातीनी आपली काही वैशिष्ट्ये जपून ठेवली आहेत. आपले जीवन सुखी-समृध्द होण्यासाठी मानवाने आपल्या आचरणात अनेक चांगल्या गोष्टींचा स्वीकार केला असला तरी, काही अनिष्ट प्रथा, अंधश्रद्धा सारख्या घातक गोष्टीच्या आहारी जाऊन, आपल्या व आपल्या समाज बांधवांच्या नाशास कारणीभूतही झाला आहे. संस्कृतीने माणूस समृद्ध व्हावा, तो माणूस म्हणून घडावा. त्याचे जीवन कल्याणकारी ठरावे, अशीच साऱ्या मानवाची इच्छा असणार. खरं तर चांगल्या प्रथा, परंपरा, रूढी ह्या समाज कल्याणासाठी उपकारक ठरणाऱ्या असतात. म्हणूनच त्याचे संवर्धन आणि संवहन करणे आपणां सर्वांचे कर्तव्यच ठरते. हीच धारणा पेरकी समाजाची ही दिसते. इतर जाती प्रमाणेच पेरक्यांनीही आपल्या जातीचा वेगळेपणा जपत, पुढच्या पिढीसाठी त्याचे जतन केल्याचे दिसते. मात्र अनेक विधीविशेष हे पुरोहिताकडून करविल्या जाणारे असल्याने व एकच पुरोहित अनेक जातीचे पुरोहित्व करीत असल्याने त्यांच्या विधीत साम्य असणे स्वाभाविक आहे. तसेच पेरक्यांच्या बाबतीत झाले आहे.

सर्वप्रथा, परंपरा, रीतीरिवाज, चालीरीती, रूढीचा विचार करता असे दिसते की, माणसावर येणाऱ्या सर्व अरिष्टांचा, दुष्ट व्यक्तींचा पाडाव करून सृष्ट शक्तीच्या विकसनाने मानवी जीवन सुसह्य व समृध्द बनविण्याचे मानवाने केलेले पध्दतशीर प्रयत्न होत. पेरकी समाजही याला अपवाद नाही. यासाठी हिंदूधर्मामध्ये षोडष संस्काराचा उल्लेख आहे. त्यात गर्भादान, पुंसवन, सीमंतम किंवा सीमंतोन्नयन (डोहाळ कौतूक), जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन (घास भरविणे), चुडाकर्म (जावळे काढणे), कर्णवेध (कान टोचणे), अक्षराभ्यास, रजस्वला (ऋतुमती होणे), विवाह (विवाहविधी), सप्तपदी, गृहप्रवेश, इत्यादी संस्काराचे पालन काही प्रमाणात पेरक्यांमध्ये केले जाते. मात्र अलिकडे विधीमध्ये सरळ-सोपा मार्ग शोधण्यात येतो आहे. पूर्वीच्या विधी विशेषा पेक्षा आता मनोरंजन आणि दिखाव्यावर जास्त लक्ष दिले जात आहे.

'पेरकी जन विवाह पध्दती' या नावाने पेरकी जनसंघम विदर्भने एक पुस्तिका छापुन पेरकी समाजाच्या विवाह पध्दतीची सविस्तर माहिती उपलब्ध करून दिले आहे.

पेरक्यांची दैवते, सण, व्रतवैकल्ये -

पेरक्यांचे मूळदैवत म्हणजे मल्लन्ना. मल्लन्ना म्हणजे मल्लारी-मल्हारी अर्थात शिवशंकर! पेरक्यांचे आदिपुरूष गिरीराजानी (गिरीराजू) श्री शंकराची परम् भक्ती करून त्यांना प्रसन्न करून घेतल्याचे 'मैलारूदेवु' या ग्रंथात सांगितले आहे. याच ग्रंथात पुढे 'पेरिके' लोकांचा तो इष्टदेव होय. असेही म्हटले आहे. म्हणजेच अनादी काळापासून पेरक्यांच्या पूर्वजांनी आपले दैवत-आदि दैवत-कुल, दैवत-इष्ट दैवत म्हणून शंकरालाच मानलेले आहे. आणि आजही ते पेरकी जनांचे मुख्य दैवतच आहे.

मल्हार देव व महिलादेवी
अर्थात
भगवान शिवशंकर व माता पार्वती

'शिव' हे केवळ पेरक्यांचेच दैवत नसून सबंध हिंदूधर्मीय लोकांचे ते आराध्य दैवत आहे. तो सामान्यांनाही आपला वाटतो. किंबहुना तो बहुजनांचा लोकदेव आहे. त्याला या नावारूपात लोक भजतात - पूजतात आणि तो त्यांना प्रसन्नही होतो. अशी दृढ धारणा दिसते. पेरक्यांनी याच शिवाला मल्लन्नाच्या रूपात आपले दैवत मानलेले आहे. ह्याच दैवताला मल्लारी, मल्हारी, मल्हारी-मार्तंड, मैलार, मैराठ अशी ही नावे आहेत. भगवान शिव हा या सर्वांचा केंद्रबिंदू होय. ज्याला आपण आज खंडोबा किंवा मैलार या नावाने ओळखतो. तो शिवाचा मार्तंड भैरवीरूपी अवतार होय. या बद्दलची सविस्तर माहिती या ग्रंथात दिली आहे.

रेणुकापुत्र परशुराम

इतर वेळेला मल्लन्नाची (शिवाची) भक्ती, श्रध्देने पूजा तर केल्या जातेच पण विशेष मंगल प्रसंगी मल्लन्नाची पूजा विधीवत करण्याची प्रथा अजूनही पेरकी समाजात रूढ आहे. विवाहप्रसंगी, दिवाळीत आणि इतर महत्वाच्या प्रसंगी केल्या जाते. मल्लन्नाची सट बसविल्या जाते. वऱ्हाडात

BW

सटपूजा फार मोठ्या श्रद्धेने केल्या जाते. मल्लन्नाच्या पूजेत भंडाराला (हळदीला) विशेष महत्व आहे. पूजेच्या वेळेला कुळातला प्रत्येक सदस्य आपल्या पूर्वजांचे, कुल-गोत्रांचे नामस्मरण करून भंडारा उधळतो आणि उगे-उगे (घुगे-घुगे) असा आवाज करून देवापुढे नतमस्तक होतो.

'पेरिकान्वयुलू' या ग्रंथात 'रेणुका' पेरकी कुलकन्या असल्याचे सांगीतले आहे. म्हणून पेरकी बांधव तिला पेरक्यांचे आराध्य दैवत मानतात. ती ही कथा आपल्या ग्रंथात विस्तृतपणे आली आहे. रेणुका-यल्लम्मा-एकवीरा म्हणजे आदिशक्तीचेच एक स्वरूप होय. पेरक्यांची जी आराध्य दैवते आहेत,

त्यात अनेक ग्रामदेवतांचाही समावेश आहे. यात देवीच्या अनेक रूपात तिला मान मिळतो. शिवाय प्रत्येक गावात हनुमान आणि माता (पोच्चम्मा) मंदिर असतेच असते. याशिवाय विठ्ठल, विष्णू, गणपती इत्यादी देवानाही पेरकी श्रद्धेने पूजतात, देवाबरोबरच साधू-संताच्या चरणी लीन होतात.... आणि यातून अनेक सणाचाही जन्म होत गेला. व्रत वैकल्ये ही निर्माण झाली. अनेक लोक अत्यंत निष्ठेने श्रध्देने ही व्रत -वैकल्ये करीत असतात. त्या निमित्ताने होणाऱ्या सणात उत्साहाने सहभागी होऊन आपला आनंद व्यक्त करतात. पेरक्यांच्या सणामध्ये प्रामुख्याने गुढीपाडवा, दिवाळी, दसरा, होळी, पोळा ब्रतुकम्मा, (बोडेम्मा), मकर संक्रात हे सण उत्साहाने साजरे केल्या जातात. इतरही स्थानीक सणामध्ये पेरक्यांचा सहभाग असतोच.

पेरक्यांचे कुलदैवत

जेजूरीचा खंडोबा

पेरक्यांची आदिशक्ती

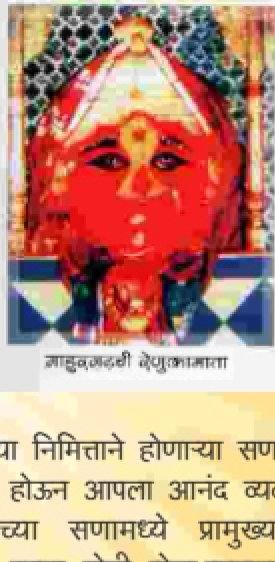

माहुरगडची रेणुकामाता

पेरक्यांची आदिशक्ती

माता चामुण्डेश्वरी, म्हैसूर.

पेरक्यांची आडनावे -

जवळपास सर्वच समाजामध्ये आडनाव हा कुतूहलाचा विषय आहे. आडनाव म्हणजे काय? ते कसे आले? कुणी आणले? कशासाठी आणले? असे अनेक प्रश्न अजूनही अनेकांच्या मनात

BW

उद्‌भवत असतात. मुलांच्या, युवकांच्या मनात तर सातत्याने येत असतात. ते जाणून घेण्याची त्यांची इच्छा त्यांना स्वस्थ बसू देत नाही. त्यांची जिज्ञासा त्यांना हे जाणून घेण्याच्या धडपडीला प्रवृत्त करते आणि त्यातून शोधा-शोध सुरू होते. या शोधातून सापडलेल्या काही नवलकारक गोष्टी ह्या मुळातून वाचनीय आहेतच शिवाय रंजकही आहेत. पहा -

जगातल सर्वात जुनं आडनाव इसवीसनापूर्वी 3050 या सालातलं असल्याचा दावा 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकार्ड' न केला आहे. चीन मधल्या राजकीय नेत्यांनी आपण इतरांपेक्षा मोठे आहोत-काही तरी वेगळे आहोत, हे दाखविण्यासाठी आपल्या नेहमीच्या नावा व्यतिरिक्त एक अन्य नाव आपल्या कुटुंबाला-समुहाला देवू लागले. त्या सोबतच इतर धनिक मंडळी आणि इतरांनीही हा कित्ता गिरविण्यास सुरूवात केली, यातून मुख्य नावापुढे-मागे एक अन्य नाव लावू लागले, तेच पुढे आडनाव म्हणून रूढ होत गेले. आणि मग पुढे ते जगभर पसरले.

महाराष्ट्रात तर याची सुरूवात अगदी अलिकडच्या काळातली आहे. पेशवाईचा काळ संपेपर्यंत माणसाला आडनाव लावत नसतच मुळी. फार झाल तर नाव पुढे वडिलांचे नाव लावत असत. उदा. नारायण गणपत, अशोक देवराव, तुकाराम सखाराम इत्यादी. असं म्हटलं तरी काम भागत असे, मात्र पुढे-पुढे संख्या जस-जशी वाढत गेली; तेव्हा व्यक्तीला ओळखण्यासाठी अडचणी येऊ लागल्या, जसे समाजात-गावात एकाच नावाच्या दोन व्यक्ती असल्या तर मग ओळखायचे कसे? उदा. अशोक-अशोक नावाच्या दोन व्यक्ती असल्या तर एक अशोक काशीनाथ चा आणि दुसरा अशोक हा बळीराजाचा यावरून त्यांची ओळख पटवल्या जाऊ लागली आणि ही पध्दत जवळपास 'इंग्रजाचं राज्य सुरू होईपर्यंत अशीच सुरू राहिली. आता मात्र संपूर्ण जगात आणि आपल्या देशातही आडनाव लावण्याची प्रथा सार्वत्रिक झाली. विशेष म्हणजे त्याला सामाजिक आणि कायदेशीर मान्यताही मिळाली आहे.

आडनाव म्हणजे काय?

आडनाव म्हणजे कुलनाम. यालाच उपनाव असेही म्हणतात. भारतातल्या बहुतांश लोक समुहात आडनावे लावण्याची पध्दत आहे. हीच पध्दत पेरकी समाजातही रूढ आहे. भारतीय संस्कृती कोशकारांच्या मते, 'एक कुलातील सर्वांचा निर्देश ज्याने करता येतो. ते आडनाव होय.' शब्दकोषातील अर्थ व उत्पत्तीनुसार 'अडनाव, आडनाव, उपनाव, घराण्याचे नाव, वंशाचे नाव, कुलनाम, कुळनाम, तसेच तेलुगू भाषेत 'इंटीपेरू' इत्यादी रूपात वापरला जातो. याचाच अर्थ असा की, संपूर्ण कुटुंबाला किंवा त्यात असलेल्या सबंध वंशावळीला दिलेले नाव म्हणजे 'आडनाव' होय. पेरकी समाजातही याच अर्थाने ते रूढ झालेले आहे. पेरकी समाज मुळातच तत्कालीन संयुक्त मद्रास प्रांत आणि आंध्रप्रदेशातून स्थलांतरीत झालेला असल्याने ही आडनावे त्याच अंगाची असल्याचे आढळते. मात्र त्यानंतर ते महाराष्ट्रात आले, त्यावर महाराष्ट्रीय संस्कृती

BW

आणि येथील लोक व्यवहाराचा परिणाम होऊन त्याच्यांत अनेक बदल झाले. त्यानुषंगाने त्यांच्या आडनावावरही त्याचे परिणाम दिसून येतात.

सद्या आंध्र व तेलंगणात, आधी आडनाव नंतर व्यक्तीचे नाव लावण्याची पध्दत रूढ आहे. उदा. अंकत रामन्ना, पाईली गोविंदा इत्यादी अलिकडच्या काळात तर ही आडनावे इंग्रजी वर्णाक्षराने लिहिली जात आहेत. उदा. ए. रामन्ना, पी.गोविंदा इत्यादी. दुसरा एक बदल म्हणजे महाराष्ट्रात आडनावापुढे वार लावल्या जाते. उदा. अंकत-अंकतवार, पाईली-पाईलवार आणि लिहितांना आधी नाव म्हणजे रामन्ना अंकतवार गोविंदा पाईलवार असे लिहिल्या जाते. हेच मराठवाड्यात 'वार' ऐवजी 'वाड' असे लिहिल्या जाते. कंदमवार ऐवजी कंदमवाड.

पेरकी समाजातील आडनावाचे एक कुतूहल म्हणून मी जेव्हा अभ्यास केला तर मला जवळपास एक हजाराच्या आसपास आडनावे आढळले. त्यातील सुमारे 175 आडनावे महाराष्ट्रात प्रचलित आहेत. या 175 आडनावाचा अभ्यास-ती कुठून आली? कशी रूढ झाली? आदिंचा विचार 'आडनावे' या प्रकरणात सविस्तरपणे केला आहे. उदा. शेट्टी वरून आलेले एक आडनाव पाहू या - 'दोराशेट्टी'
(दोराशेट्टी-दोरा+शेट्टी= गोप्पा, उन्नतामैना) दोरा म्हणजे श्रेष्ठी, मोठा माणसू, प्रतिष्ठित, मान्यवर, महाजन, सर साहेब या अर्थाने हा शब्द येतो. पूर्वी पेरकी समाजात व्यापार-समृध्दीच्या दृष्टीने जी घरे प्रतिष्ठित मानल्या गेली, ती नंतर त्याच आडनावाने ओळखल्या जाऊ लागली. कालांतराने याही आडनावात अनेक अपभ्रंश होत गेले - दोरा शेट्टी, दोरा सेट्टी, दोरेशेट्टी, दोरा शेट्टीवारू, दोरशेटवार, दारसेटवार, डोरसेटवार इत्यादी. या आडनावाची घरे प्रामुख्याने नागपूर -कामठी येथे जास्त प्रमाणात आढळतात. 'आडनावे' समजून घेणे अतिशय रंजक आहे. इच्छुकांनी आपल्या ग्रंथाच्या प्रकरण 5 मधून अवलोकन करावे.

पेरक्यांचे मानचिन्ह -

चिन्ह म्हणजे निशाण, माणूस आपले अस्तित्व सिध्द करण्यासाठी, आपली ओळख राखण्यासाठी, स्वतःचे असे एक प्रतीक (चिन्ह) निर्माण करतो. पेरक्यांनीही अत्यंत विचारपूर्वक एक प्रतीक (ध्वज) आपल्यासाठी निर्माण केले आहे. त्यात पेरकी जणांच्या सर्वकार्य कलापाचा, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आणि राजकीय जीवनादर्शाचा संपूर्ण साक्षात्कार घडविल्याचे दिसते. त्यातील सर्व खाणाखुणांचे सूक्ष्म अवलोकन केल्यास, आकर्षक चित्र संगती पाहिल्यास, आशय घनतेचा विचार केल्यास, एवढा सूक्ष्म विचार करून जे मानचिन्ह तयार केल्या गेले, ते केवळ विलोभनीयच नाही, तर अर्थपूर्णही आहे, याचा प्रत्यय येतो. यावरून आपले पूर्वज किती प्रगल्भ विचाराचे आणि समाजभान राखणारे होते याची कल्पना येते आणि अभिमानाने ऊर भरून येतो. आपण हा ग्रंथ एकदा वाचाच! आपल्या पूर्वजाबद्दल नितांत आदर आणि अभिमान वाटेल.

BW

पेरक्यांचे गोत्र

- डॉ. राम बोडेवार
9420300139

विशेष टिप्पणी : *जिस तरह भारत में मनुष्य की पहचान उसके नाम और सरनेम और जाति और धर्म से होती है।*

उसी तरह से उसका गोत्र भी पुछा जाता है। खास करके शादी जोड़ते समय और यज्ञ हवन के दौरान पंडीत यजमान से गोत्र पूछकर आहूति देता है। गोत्र का महत्व शादी विवाह जोड़ते समय भी होता है। एक गोत्र में शादी विवाह जोड़ा नहीं जाता है।

इसलिए गोत्र का पता होना आवश्यक होता है। हम में से अनेक लोगों को गोत्र का पता नहीं होता है। ऐसे में पंडीत पूजारी काश्यप गोत्र बताकर यज्ञ हवन में आहुति डालने लगाता है।

यह आहुति हमारे सैकड़ों पुरखों को जाती है।

पेरकी समाज के अध्यनकर्ता और ग्रन्थ के रचयिता डॉ राम बोडेवार जी इस लेख के माध्यम से हम सब पेरकी बंधूओं को उनके सरनेम के हिसाब से गोत्र बताया है।

पेरकी समाज की यह एक बहुत ही बड़ी सेवा है। इसके लिए पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप की मैगजीन का संकलन कर्ता होने के नाते मैं प्रकाश गोविन्दवार उनका शुक्रिया अदा करता हूं। धन्यवाद डॉ राम बोडेवार जी आपके पेरकी समाज के ग्रन्थ संपदा पेरकी समाज - आज़ और कल...... के लिए और आपकी मेहनत के लिए। धन्यवाद

पेरकींच्या आडनावाप्रमाणे त्यांची गोत्रेही विस्मयकारक आहेत. आज आडनावे जशी हिंदू समाज व्यवस्थेचे एक अंगभूत वैशिष्टय आहे, अगदी तसेच गोत्रही खास वैशिष्ट्य मानायला हवे. कारण समाज घटकांना आपल्या आधिपत्याखाली ठेवण्यासाठी, काही हितैशीनी एक विशेष व्यवस्था निर्माण केल्याचे दिसते. केवळ आठ ऋषींच्या वंशात सर्व समाजाचे वर्गीकरण करून लोकमनावर भावनिक नियंत्रण ठेवण्याचा हा प्रयत्न अत्यंत यशस्वी झाला. लोकांना या ऋषीकुळात स्वतःला गोऊन घेतले ऋषीकुल महणजे आपले कुल मानले. त्यामुळे हे गोत्र पक्के झाले. असे दृढमूल झालेले हे गोत्र म्हणजे नेमके काय?

ऋगवेदात गोत्र शब्द अनेकदा आलेला आहे. तिथे या शब्दाचे गाईचा गोठा, गाईचा कळप, मेघ पर्वत श्रेणी, पर्वत शिखर, किल्ला इत्यादी अनेक अर्थ होतात. काही ठिकाणी गोत्र शब्दाचा, 'समूह' असा अर्थही घेतलेला दिसतो. छांदोभ्योषनिषदात कुटुंब या अर्थी गोत्र शब्द आलेला आहे. यावरूनच पुढे त्याचा 'एकाच वंशातले लोक असा अर्थ केला गेला. बोधायन गोत्र शब्दाचा अर्थ सांगतांना म्हणतात की, विश्वामित्र, जमदग्नी, भारद्वाज, गौतम, अत्री, वशिष्ठ व कश्यप हे सात व आठवा अगस्त्य या ऋषींच्या अपत्यांना गोत्र असे नाव आहे. या मूळ आठ ऋषींना गोत्रकृत, गोत्रकार, वृध्द, स्थविर, किंवा वैश्य असे म्हटलेले

आहे. पुन्हा या प्रत्येक ऋषीच्या वंशात काही विशेष कर्तबगार पुरूष निपजले आणि त्यांच्या नावावरूनही त्या वंशाचे नाव प्रसिध्द झाले. मग त्या पुरूषांची गणना मूळ गोत्रातच पण स्वतंत्र गोत्रकर्ता म्हणून होऊ लागली. त्यांना गोत्रगण म्हणून लागले. अशाप्रकारे मूळ आठ गोत्रे व प्रत्येकाच्या अंतर्गत उत्पन्न झालेल्या गोत्रगणांची ही गोत्रे पक्की होत गेली.

मात्र पेरक्यांची गोत्राची संकल्पना थोडी भिन्न आहे. त्यांनी ऋषीकुळांना गोत्र न मानता स्वतःच्या पूर्वजांची आणि आपल्या आराध्य दैवतांची नावे आपल्या गोत्र नामासाठी वापरली आहेत. पेरक्यांची ही भूमिका, त्या काळात क्रांतीकारक म्हटली पाहिजे. खऱ्या अर्थाने गोत्र शब्द कुटुंबातील एखाद्या शूर, विद्वान किंवा श्रेष्ठ पुरूषाला लावतात आणि नंतर त्यांच्या वंशजाना त्या पुरूषावरून नाव मिळते. याला लौकिक गोत्र असे नाव असून ते क्षत्रियामध्ये असते. पेरक्यांची गोत्र संकल्पना ही द्रविडांच्या 'देवक' सकंल्पनेशी जवळीक साधणारी आहे. देवकाची कल्पना जगात सर्वत्र प्रचलित असल्याचे पंडित मानतात. माहोंजोदडो येथील प्राचीन अवशेषातही देवक पूजेची लक्षणे काही शास्त्रज्ञांना आढळली आहेत.

ऋषी कुळातील गोत्र पध्दती पेरक्यांनी पूर्णपणे नाकारली असून, पेरक्यांची जी गोत्र पध्दती आहे, ती देवकांशी जवळीक साधणारी आहे. या संदर्भात सय्यद सिराजुल हसन लिखित 'निजामाच्या आधिपत्या खालील जाती-जमाती या ग्रंथाच्या व्हॉलूम तीन मध्ये खालील माहिती दिली आहे. 'या जातीत म्हणजे, 'पेरिका जातीत 101 गोत्र आहेत'. उदा. दाखल काही गोत्रांची नाव दिली आहे. 'गोलंदत श्री मालू, श्रीमालू, चुड्डापल्ला मलू, संबू लिंगम मलू, करपुटी मलू, मलकाश्री मल्लू, कामागंटी मलू, उलामलू, अग्राम मलू, आगाश्री मलू, पेदापोरी मलू इत्यादी'. यावरून जी गोत्रनामे आहेत ती ऋषी कुळातील नाहीत, हे सिध्द होते. काही वरिगाभक्त (पेरक्यांचे भाट) अलिकडच्या काळात काही पेरकी लोकांना ऋषी कुळातील गोत्र सांगून तुमचे गोत्र हेच आहे; असे पटवून देतांना दिसतात. याचे मुख्य कारण म्हणजे पेरक्यांचे स्वगोत्राविषयीचे अज्ञान होय. वरिगा भक्ताच्या मते जर आपल्या गोत्राचे नाव आठवत नसेल तर कश्यप गोत्र म्हणून यजमानाचे समाधन करतात. त्यांनाही पेरक्यांच्या गोत्र-दैवका विषयी अपूर्ण माहिती असल्याने हे घडत गेले आणि त्यांच्या नामावलीच्या सूचित पेरक्यांच्या दप्तरात नसलेले गोत्र नोंदविल्या जाऊ लागल्याचे आढळत आहे. खरे तर पेरक्यांची गोत्रे ही त्यांच्या पूर्वजांच्या, वीर पुरूषांच्या, त्यांनी व्यापारवृत्ती स्वीकारल्यानंतर वेगवेगळ्या स्थानावरून, त्यांच्या आडनावावरून या सारख्या अनेक विषयाला अनुसरून विविध गोत्र नामे स्वीकारल्याचे दिसतात.

गोत्र नामामध्ये प्रामुख्याने मल्लू-मल्ला, मालू, सिरा-सिरी, शीला-सिला या शब्दांचा प्रत्ययाच्या रूपात उपयोग होत असल्याचे दिसते. त्या शब्दांचा निश्चित अर्थ लागत नाही. पण त्यांचे एकूण स्वरूप हे श्रद्धा, नीती, कल्याण याला अनुसरून असल्याचे आढळते. एकंदरीत मल्ल, श्री आणि शील हे शब्द पेरक्यांच्या गोत्र नामांना लावल्या जाण्यामागे आपले पूर्वज (मल्लवंशीय) त्यांचे कल्याणकारी जगणे, (श्री) आणि त्यांचे सत्‌शील चारित्र्य हा भावार्थ किंवा सद्‌हेतू नक्कीच असावा असे वाटते. गोत्र कोणत्याही नावाचे असले तरी त्यामागे उपरोक्त तीन पैकी एक शब्द जोडून त्या गोत्राला अर्थपूर्ण बनविल्या गेल्याचे दिसते.

BW

कटकाशिला	व्यासा
नकीशिला	गोल्लेना / गोलेना
ऐरेनी	ऐदना
पुट्टा	अरिल्ला
कत्रा	कोंडी
नागा	मग्गे
पुरशिला	मुडुसनी
कंदी	मंदा
हितीलया	जुटूरी
शंभू	पूर्णा
उग्गे / उग्गी / उग्र	बंडारी
एलुमा	यागा
विप्रा	सौटा
चंदना	सौटापर्नी
सुता	चेंबू
मृगशिरा	शेंटू
तल्ला	

महाराष्ट्रातील पेरकींची आडनावे व गोत्रे

प्रचलित आडनावे	गोत्रे
अक्कलवार, अकलवाड,आक्कालवाड	एलूमब्बुला
अच्चेवार, आच्चेवार, अच्चेवाड, आच्चेवाडा	कटकशिला, पेराला
अनगुलवार,अनगुलवाड	महीपती
अनपर्तलवार, अनपर्त्तुलवार, अनपतवार, अनपतवाड	आरेल्ला
अप्पनवार, अप्पनवाड	अप्पा
अल्लमशेट्टीवार, अलशेट्टीवार, अलसेटवार, अलचेटवार अलचेटवाड, आलिशेट्टीवार	पुट्टाशला, पिदाला
अल्लेवार, आल्लेवार, आलेवार, अल्लेवाड, आल्लेवाड, आलेवाड	उग्गे

BW

अंकीतमवार, अंकतवार, अंकतवाड	सत्राशिला
अंगलवार, अंगलवाड	
अंचटवार, अंचेटवार, अंचटवाड, अंचलवार, अंचमवार, अंचमवाड	पेराला
एंचलवार, एंचलवाड, येंचलवार, येंचलवाड	बोलेना
आकुरेडीवार, आकरेड्डीवार, आक्रडवार, आकरेडवार	मद्दीकुंटा
आकुलवार, आकुलवाड	मंदा
आसमशेट्टीवार, वासमशेट्टीवार, आसमसेटवार, आसमशेटवाड	कटका
उगेवार, उग्गेवार, उगेवाड, उग्गेवाड	गोलेना
उल्लेवार, उल्लेवाड	ऐरेनी
उप्परवार, उप्परवाड	कंदी
उप्पलवार, उप्परवाड	पेद्दापुरपु मल्लू
ऊटलावार, ऊटलावाड	सत्राशिला
एम्बडवार, येंबडवार, एमडीवार, येमडीवार एम्बडवाड, अेंबडवार	ऐरेनी
एडमेवार, येडमेवार, एडेमावार, एडमेवाड, एडमावार	कप्पागंटी
कटकमवार, कटकमवाड	कंदी
कट्टेवार, कट्टावार, कट्टेवाड,कट्टावाड	आरेल्ला
कन्यावार, कन्यावाड	दभ्भानाला
कन्नमवार, कन्नमवाड, कनेमोड	
कराडवार, कराडवाड	गुंड्ला, गोलेना
कर्डेवार, खर्डीवार, कर्डेवाड	कारमपुरी
कर्रेवार, कर्रेवाड, खर्डेवाड, काळे	कारमपुरी
कंदमवार, कंदमवाड	गोलेना/आरेल्ला
कंदुलवार, कंदलवार, कंदलवाड	वनम
कामगंटीवार, कामगंटी, कामघंटी, कामघटे, कामगटे	शंभू
कारकूरवार, कारकूरवाड, खारकूनवार	कटका
कालकूलवार, कोलकुलवार	मुरूपू

BW

किरंगे, कामनाशे	करूगोंडा
किलशेट्टीवार, किलसेटवार, किलचेटवार, किलचेडवाड	सौटापर्णी
कुंचलवार, कुंचालवार, कुंचालवाड	येदोरला, येदोर्ला
कोक्कूवार, कोक्कूवाड	कपूगंटी
कोत्तापल्ले, कोत्तापल्ली	कटका
कोप्पूलवार, कोपूलवार, कोप्पूलवाड	सद्गंटी
गट्टीकोप्पूवार, गटकपवार, गटकावार, गेटकेवार, गटकपवाड	कत्रा / सत्रा
गंप्पावार, गंप्पावाड	सत्रा
गालेवार, गालेवाड	बोलिना
गुज्जेवार, गुज्जीवार, गुजीवार, गुजेवार, गुजवार, गुज्जेवाड	कटका
गुडेंकवार, गुडंकवार, गुडंकवाड, गुडेनुकावाड	शलपाटी
गुडेवार, गुडावार, गडेवाड	शलपाटी
गुंफुवार, गुंफूलवार, गुंप्पूलवाड	शंभू
गोड्लावार, गोडलेवार, गोड्लावाड	नागा
गोपतवार, गोपतवाड	उग्गी / उग्गे
गोपेवार, गोपेवाड	पेद्दावारी
गोरलेवार, गोर्लेवार, गोर्लेवाड	उडुगोंडा
गोविंदवार, गोविंदुलावार, गोविंदवाड	चेन्नाशिला
चंदनगिरीवार, चंदनगिरीवाड	कत्तुला
चंद्रगिरीवार, चंद्रगिरीवाड	पर्वताला
चालीगंजीवार, चालीगंजेवार, सालीगंजीवार, चालीगंजीवाड	करूगोंडा
चिंतनवार, चिंतमवार, चिंतमवाड	कटका
चिंताकुंटवार, चिंताकुंटलावार, चिंताकुंटलावाड	कत्रा / सत्रा
चुनचुनवार, चुंचवार, चुंचुवाड	कटका
जिड्डेवार, जिद्देवार, जिड्डुवाड	गोलेना / जूटूरू
डाकावार, डोकेवार, डोकेवाड, डाकावाड	सद् गंटी

BW

तम्मीशेटवार, तामशेट्टीवार, तामसेटवार, तामशेटवार, तामसटवार, टांगसेटवार	राऊला शिला
तातावार, तातेवार, तातेवाड	ऐरेनी
तिरथवार, तिर्थलवार, तिरथलावार	पुलीचर्ला
तिप्पनवार, तिप्पणवार, टिपणवार, तिप्पणवाड	कटका
तुडमवार, तुडमवार	मरपुशिला
तोंगलवार, टोंगलवार, टोंगलवाड	वलला
तोटावार, तोटेवार, तोटलावार, तोटेवाड	पोलाला
बत्तुलवार, देशबत्तुलवार, बातुलवार, बत्तुलवाड	शलपाटी
दाचापल्लीवार, दासापल्लीवार, दासनापल्लीवार	गोरीटुला
दामनवार, दामणवार, धामणवार, दासरवार, दासरवाड	गोरीटुला
दासपतवार, दासपतलावार, दासपतलावाड	महीपती
दुम्मनवार, दुमनवार, दुम्मनवाड	पोलाला
दुंड्रावार, धुंड्रावार, डूडावार, दुडावार	कत्रा
दोड्डीवार, दोड्डेवार, दोडेवार, दोडेवाड	राऊला / गुट्टलाशिला
दोराशेट्टीवार, दोरशेट्टीवार, दोरसेटवार, डोरसेटवार, दोरसटवार	ऐरेनी
दोमटीवार, दोमटवार, दोमटवाड	राऊला
नरसीकर (मूळ वड्डेवार)	राऊलामल्लू
नारेड्लावार, नारदेलवार, नारदेलवार, नांर्देलवार, नरेडवार, नरडवार	चंदना
नागमवार, नागमवाड	सत्रा
नारेंद्रवार, नालेंद्रवार, नालेंद्रवाड	सत्रा
नामदार	सत्रा
नामसानी, नामसान	सत्रा
नीलमवार, नीलमवाड,	आलुवाला
नेल्लीकवार	उग्गी
पंचलवार, पंचलवाड	कटका

BW

पंचफुलीवार, पंचफुलीवाड	गोलेना
पन्नासवार, पन्नासवाड	पेद्दापुरपू/गोलेना
परशनवार, परशनवाड	शंभू/एलिमब्बुला
पाईलवार, पाईलावार, पाईलीवार, पायलवार, पाईड्लावार, पैडलेवार, पायडलवार, पायदलवार, पैदलवार,	कारमपु/ कटका
पातक्यमवार, पातकेवार, पातीवार, पातकेवाड	कंदी
पाटोदेकर (मूळ-कंदलवाड)	आरेल्ला
पास्सेवार, पासेवार, पासेवाड	गोलेना
पैशेट्टीवर, पैशटवार, पैसटवार, पायसटवार,	उग्गेशिला/ कटका
पेशेट्टीवार	
ब्यारमवार, प्यारमवार, ब्यारमवाड	सत्रा
पिन्नमवार, पिन्नमवाड	पेरला
पिंगलवाड, पिंगलवार	चंड्डुगोंडा
पुज्जलवार, पुजलवार, पुजावार, पुजारी	मड्डूतना, सत्रा
पेट्रमवार, पेट्रेवार, पेट्टेवार, पेट्टेवाड	सत्रा/ कटका
पोतराजवार, पोत्राजवार	ऐरेनी/ पत्तीपंड्ला
फिरंगे (सुब्बनवार)	येदोर्ला
बंडावार, बंडीवार, बंडेवार, बंडेवाड	बोलेना
बच्चेवार, बच्चेवाड	सायंपू
बद्दावार, बद्दलवार, बद्देवार, बद्देवाड	उग्गी/सत्र
बडगेवार, बडगेवाड	नागारापू
बरपटवार, बरपटवाड	सत्राशिला
बरलावार, बर्लावार, बर्लावाड	कत्रा
बाकमवार, बाकमवाड	ऐरेणी
बादेवार, बादेवाड	पूर्णा, ताल्ला
बिल्ला, बिल्ले	कटका
बुद्धेवार, बुद्देवार, बुद्धावार, बुद्देवाड	ऐनादानी/नानेल्ला

BW

भूशेट्टीवार, भूशेटवार, भूसेटवार, भूसटवार,	कंदी
बुशेट्टीवार, बुसटवार,भूषटवाड	
बुस्सावार, भुसेवार, बुसेवार	आलेटी / उग्र
बुटयनवार, बुटयनवाड, बुट्टनवाड	मनीकट्टूमल्लू
बुर्रीवार, बुर्रेवार, बुरीवार, बुर्रीवाड	उसरी गोंडा
बेडदेवार, बेडदावार, बेडिदेवार, बेरदेवार	मुरूपू/ मृगशिरा
बोगावार, बोगेवार, भोगेवार, भोगेवाड	राऊला
बोडाकुंटीवार, बोडकुंटवार, बोळकुंटवार, बोरकुंटवार	उग्गे
बोरकुंडावार, बोडावार, बोडावाडू, बोडेवार	
बोलगोडवार, बोलगुंडेवार, बोलगुंडवार	कटका
मंचलवार, मंचालवार, मंचलवाड	आरूट्ला
मल्लेवार, मल्लेलवाड	पेद्दापुरमू
महाजन (मूळ-तातेवार)	चेदर्ला
मेडमवार, माडेमवार, म्याडमवार, म्याडमवाड	बोलनी
मारतावार, मार्तावार	कंदी, कत्रा
मालेवार, मालेवाड	
मासमशेट्टीवार, मासेट्टीवार, मासेटवार, मासटवार	ऐरेनी
मीसेवार, मिसेवाड	सत्रा
मिरालवार, मिरालवाड	चेदर्ला
मिंदेवार, मिंदेवाड	पेद्दापुरम्
मुट्टेनवार, मुट्टेनवाड	बोनापाटी
मुदसन, मुधसन	कटका
मुद्दमवार, मुद्दमवाड	उपिरी
मुत्तेमवार, मुत्तीवार, मुत्तेवार,मुत्त्येमवार, मुतनेवार,	उग्गे, गोलेना
मुतनेपवाड, मुल्लेवार, मुल्लेमवार	
मुरशेट्टीवार, मुरशेटवार, मुरशेटवाड	कटका / चिंतला
मेंगनवार, मेंगनवाड	पेट्टेला
मेलचेटवार, मेलचेटवाड	कटका
मेलकेवार, मेलकेवाड	मग्गे

BW

मैदपवार, मैदमवार, मैदपवाड	कत्रा/सत्रा
मोंडिवाड	बोलनी
येलगातपवार, येलागतवार, येलगातपवाड	मुरूपू
येरेवार, येरेवाड	मुरूपू
रमिणेणि, रमिनेनी	उग्गी/ कोमिरेल्ली
राजन्लावार, राजनलवार, राजनवार, रांजनवार	चेन्नापती
रामेन्लीवार, रामेन्लावार, रामेल्लावार	यमर्ला
राडेवार, राळेवार, ऱ्याडावाड	त प्पा कं टी/
कपूकंटी	
लकडसवार	कटका
लिंगणवार, लिंगलवार, लिंगनवाड, लिंगरवार	चंड्डुगोंडा, पैडिला
वोड्डेवार, वड्डेवार, वड्डेवाड	राऊल मल्लू
वंगलवार, वंगलवाड	सत्रा
वन्नेवार, वन्नेवाड	वराला
शहानमवार, शहानमवाड, शहानम	एदेर्ला/ एदुर्ला
शिंगटवार, सिंगटवार, सिंगतवार, शिंगटवाड,	वरीमर्ला, ऐरेनी
सिंगतवाड	
शिरमशेट्टीवार, शिरणशेट्टीवार, सिरणसेटवार	कटका
श्रीरामुलावार, श्रीरामुलावाड	कटका
संगनवार, सिंगनवार, संगनवाड, संगनोड	मुरूपू
संदेलवार, संदलावार	कटका
सादावार, सादलावार, सादलावाड	कटका
सासनवार, सासनवाड	मुद्दुर्ला
सामुर्तावार, सामृतवार, शामृतवार, सामृतवाड	आरट
सिद्रपवार, सिद्रपवाड, सिदर्लावार	कारमपुरी
सिर्तावार, सिर्तावाड, सिरतावार	मद्दी
सुब्बनवार, सुबनवार, सुब्बनवाड	वनम, एदोर्ला
सुनकिनवार, सुंकनावार	कारमपुरी
सोमशेट्टीवार, सोमसेटवार	ऐरेनी

BW

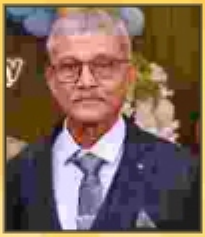

पेरकी समाज चे प्रथम सफल बिल्डर व्यवसाई आदरणीय शंकरराव जनार्दनजी पैडलवार जी होते !

- डॉ.राम बोडेवार, नागपुर

श्रध्दांजली

आज बुधवार दिनांक 11सप्टें 2024ला सकाळी ब्रम्हमूहूर्तावर आदरणीय शंकरराव जनार्दनजी पैडलवार यांनी आपली इहलोकीची यात्रा संपवली. खरं तर मनुष्याच्या जन्म मृत्यूला मुहूर्त नसतोच मुळी. तरी एखादी व्यक्ती सकाळच्या मंगल प्रहरी महाप्रयाण करीत असेल तर त्याचे सुकृतच! शंकररावांनी ही वेळ साधली हाही एक योगायोगच म्हणावा लागेल.

शंकरराव एक सालस व्यक्तिमत्त्व! अनेकांशी त्यांचे सलोख्याचे संबंध राहिले.त्यांनी आपल्या स्वकष्टाने आपला व्यवसाय उभा केला आणि वाढविला.एक बांधकाम व्यावसायिक म्हणून त्यांनी लौकिक मिळविला.शेवटपर्यंत आपल्या व्यवसायाप्रती निष्ठा राखली.व्यवसायातील अनेक चढउतार त्यांनी अनुभवले, त्यातून मार्गही काढले.एक यशस्वी उद्यमी म्हणून त्यांनी स्वतःला सुप्रतिष्ठित केले.

शंकरराव एक कुटुंबवत्सल माणूस!कुटुंबाप्रती त्यांना अपार प्रेम होते.सामाजिक अनुबंधही त्यांनी जपले.समाजाबद्दल त्यांना तळमळ होती.सामाजिक कार्यात त्यांना रस होता.त्यादृष्टीने प्रयत्नही केले.पण त्यात त्यांना म्हणावे तसे यश आले नाही.स्व.आशन्नाजी पैडलेवार, श्री राजूजी डोकेवार यांचे सोबत सामाजिक उपक्रमात ते अनेकदा सहभागी होत असत.पदाधिकारी म्हणूनही त्यांनी जबाबदारी स्वीकारण्याची तयारी दाखवली पण काही कारणाने ते जमले नाही.तरी ते झटत राहिले.

शंकररावांनी बांधकाम केलेल्या 'साई एन्क्लेव'मधील एक रूम अत्यंत जुजबी मोलाने समाजाला बैठकी साठी नेहमीसाठी उपलब्ध करून दिली.हे त्यांचे औदार्य समाज जनानी मान्य केले पाहिजे.आणि विशेष म्हणजे आजही पेरकीजनसंघम विदर्भ चा अधिकृत पत्ता -एफ-7,साई एन्क्लेव,मोहन नगर, नागपूर असाच आहे.लहानशी का होईना , शहराच्या मध्यवर्ती ठिकाणी ही जागा समाजाठी अंत्यत उपयुक्त ठरणारी आहे.हे आपणास मान्य करावेच लागेल.त्यांचे औदार्य हे समाजाला प्रेरणा देणारे आहे.एवढे मात्र खरे!

शंकररावाशी माझे खासगी संबंध अत्यंत सलोख्याचे होते.त्यांच्या सोबत चंद्रपूर - गडचिरोली जिल्ह्यांचा मी दोनदा दौरा केला.त्या प्रवासामध्ये त्यांच्या स्वभावाच्या अनेक पैलूंचा परिचय झाला.एक निगर्वी माणूस, दुसऱ्यांच्या विचारांचा आदर करणारा, आपुलकीने वागणारा, सगळ्यांना सोबत घेऊन चालणारा माणूस वाटला.त्या नंतर चंद्रपूरला अनेक कार्यक्रमात ते प्रमुख पाहुणे म्हणून सहभागी झाले. यामुळे आमच्यातील संबंध आणखी घट्ट झाले.

शेवटी नियती पुढे सारेच हतबल.भल्यापहाटेस सूर्योदयापूर्वी मांगल्याचे मंगल बेलेत महाप्रयाणासाठी शंकरराव सिद्ध झाले.... आणि मंगल प्रभेने अगदी अलगद आपल्या कवेत घेतले.हा महाप्रयानाचा ताफा शेवटी फ्रेंड्स कालनीतील स्मशानभूमीत पोहोचला.सूर्यास्तानेही अस्ताचलाची वाट धरली होती. सर्व स्नेहीच्या उपस्थित त्यांचा देह अनंतात विलीन झाला.

कौटुंबिय, आप्तेष्ट, मित्रपरिवार, नातेवाईक अनेकांनी त्यांना जड अंतःकरणाने आदरांजली वाहिली.अनेकाना अश्रू अनावर झाले.एक चांगली व्यक्ती आणि एक सालस माणूस गेल्याचे दुःख जाणवत होते.त्यांच्या कुटुंबियांना या दुःखातून सावरण्यासाठी ईश्वर बळ देवो.भावपूर्ण श्रद्धांजली.मृतात्म्यास शांती लाभो.

BW

ग्रीन नेट शेड मंगल मंडप मुव्हमेंट

नागपूर वासियों, नागपुर को गर्मी में गर्म होने से बचाने की चुनौती स्वीकार करे !!!!

Prakaash Ganpatrao Govindwar
9096170712 MD

ये शहर.... संभल... जा.... जरा.... !
तू गर्मी से.... प्यार करने चला है...... !
ये शहर रूक जा जरा ....!
थोड़े पेड़ पौधे लगा जरा....!

हमारे पौधें पालों साल भर ....!
किराया कमाओं साल भर ... !

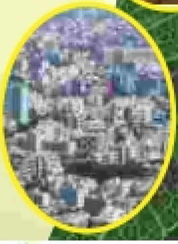

Swarnna Samrruddhi Plantations OPC Private Limited

96, Milind Nagar,
Balabhupeth, Nagpur
Maharashtra 440017

www.climatecooler.in

विशेष आभार और धन्यवाद -
लोकमत मराठी समूह

लोकमत
'ग्रीन नेट'ने घरातील तापमान केले १५ डिग्रीपर्यंत कमी

BW New

पेरक्यांचे श्रद्धास्थान

संत ईस्तारी महाराज, किन्ही, नंदपूर

पेरक्यांचे श्रद्धास्थान

श्री संत मारोती महाराज, थाटेश्वर, यवतमाळ

पेरक्यांचे श्रद्धास्थान

संत रामदासजी महाराज, किन्ही, नंदपूर

श्री अनंत महाराज, कोंढुर्ली, श्रीरामपूर

BW

पेरकी समाजाला ओळख पटवून देणारी व्यक्ती

राष्ट्रीय स्तरावर पेरकी समाजाला
राजकीय ओळख पटवून देणारी व्यक्ती

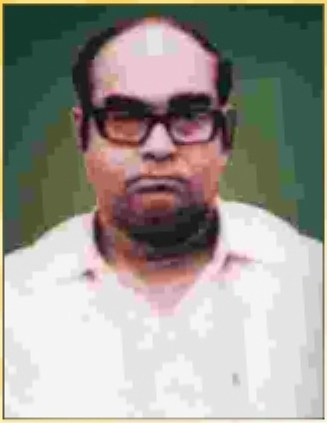

कै. गोडे मुरारी (आंध्रप्रदेश)
उपाध्यक्ष - राज्यसभा, भारत सरकार

महाराष्ट्रात पेरकी समाजाला
राजकीय ओळख पटवून देणारी व्यक्ती

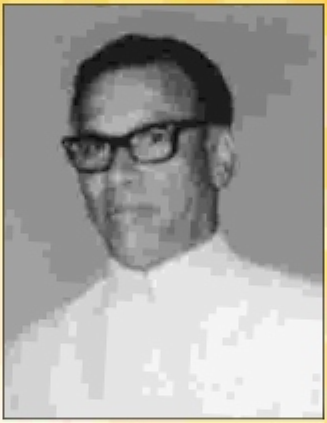

कै. लिंगण्णाजी पुत्तल पुजारी, मुंबई
आमदार, विधान परिषद, महाराष्ट्र राज्य.
राजकीय, सहकार, कामगार आणि समाजकार्यात
विशेष योगदान.

राष्ट्रीय स्तरावर पेरकी समाजाला
राजकीय ओळख पटवून देणारी व्यक्ती

श्री नानाभाऊ एम्बडवार
माजी वन व रोजगार योजना मंत्री, महाराष्ट्र राज्य.
कृषि व फलोत्पादन मंत्री, महाराष्ट्र राज्य

पेरकी समाजाला शैक्षणिक व साहित्यिक
क्षेत्रात ओळख देणारे व्यक्तित्व

डॉ. नागनाथ कोत्तापल्ले
कुलगुरू
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ,
औरंगाबाद

BW

पेरकी जनसंघम् विदर्भ चे माजी अध्यक्ष / सचिव

- अध्यक्ष -	- सचिव -
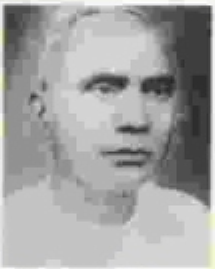	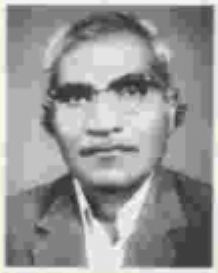
कै. पेंटय्याजी दोरसटवार नागपूर.	डॉ. विठ्ठलराव जिड्डेवार झाडगांव, जि. यवतमाळ.
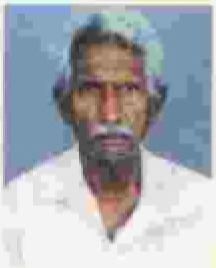	
श्री नरसिंगराव दोरसटवार नागपूर.	डॉ. गंगाधरराव जिड्डेवार नागपूर.
श्री मारोतरावजी बुर्रेवार वांजरी, जि. यवतमाळ.	श्री मदन जिड्डेवार पांढरकवडा, जि. यवतमाळ.

BW

समाज कार्यात योगदान देणारे व्यक्ती

कै. केशवराव गोपतवार
यवतमाळ.

कै. गणपतराव महाजन
वरुड, जि. यवतमाळ.

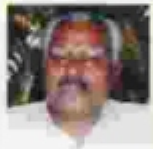

कै. पुंडलीकराव तामसेटवार
कामठी.

कै. बळीरामजी उप्परवार
पाटणबोरी.

कै. धर्माजी अंचलवार
नागपूर.

कै. उद्धवराव ह. गोविंदवार
सावंगी, पेरका

श्री बाबूरावजी पैडलेवार
नागपूर.

श्री राजाभाऊ बोडेवार
पाटणबोरी.

श्री शंकरराव पैडलेवार
नागपूर.

श्री मूरलीधरराव बुर्रेवार
नागपूर.

कै. नागोरावजी गोविंदवार, कै. महादेवराव तातेवार,कै. महादेवराव सालीगंजेवार,
कै. गोविंदराव सिंगतवार, कै. मोरेश्वर एम्बडवार, कै. गणपतराव पाईलवार.

पेरकी जनसंघम, विदर्भ

(रजि.नं.एफ ६८१ (एन) महाराष्ट्र)

मुख्य कार्यालय :- मोहन नगर, नागपूर

नविन कार्यकारीणी २०२३

प्रकाश अंचलवार, नागपूर	**रमेश अंकतवार**	**डा. शंकर मिंदेवार**	**दशरथ बरैवार**
अध्यक्ष	सचिव	उपाध्यक्ष	कोषाध्यक्ष
मो. ९३७२०२६००१	मो. ९८९०३६८८८९	फोन : ९१३०१३९५१७	मो. ९३२५४०४१०१
संतोष पोतराजावर	**राजेश्वर सागृतवार**	**व्यंकटेश मुद्दमवार**	**हिरेश्वर अक्कलवार**
सहसचिव	सहसचिव	सहसचिव	अधिक्षक
नागपूर विभाग	भंडारा गोंदिया विभाग	गडचिरोली विभाग	यवतमाळ विभाग
मो. ९८५०३३५६७७	मो. ९४२३११४७१३	मो. ९४२०११९७२६	मो. ९९७०६६७७८८

❊कार्यकारीणी सदस्य ❊

नारायण प्यारमवार, शैलेश बत्तुलवार, देविदास जिड्डेवार, उमेश पायदलवार, गोपाळ दोरशेटवार, ॲड वसंता एन्चिलवार, हुंकेश्वर अंकतवार, राम काळे, राकेश बोरकुंडवार, आनंद खर्डीवार, पांडुरंग कुरेंवार, पंकज अक्कलवार, राजू मिसेवार, शुभम तुडमवार, संतोष अंकतवार, श्रीराम मेल्केवार, सत्यनारायण एम्बडवार, डा महेश कोपुलवार, नेताजी बापूजी अन्नपत्रावर

हुंडा घेणे, देणे बंद करा व समाजाला उन्नत करा.

पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप से जुड़े हुए व्यवसायी

BUSINESS PROMOTION GROUP

पेरकी समाज बिझनेस ग्रुप की वार्षिक पत्रिका को
हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई

डॉ. ज्योती मनीष एमंबडवार
डॉ. मनीष श्रीधरराव एमंबडवार
General Manager in
Transword Furtichem Pvt. Ltd. Mumbai
यवतमाल

पेरकी समाज बिझनेस ग्रुप की वार्षिक पत्रिका को
हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई

आपल्या आगामी पुस्तक प्रकाशनासाठी हार्दिक शुभेच्छा व अभिनंदन, आपला हा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम समाजातील तरुणांना उत्साहीत व प्रोत्साहित करेल, आपले कार्य उद्योजकते साठी आणि संपूर्ण समाजासाठी सकारात्मक परिणाम करेल, आपले अभिनंदन व शुभेच्छा !

• शुभेच्छुक •
अनंत राजेश्वरराव जिदेदेवार
सहाय्यक विक्रीकर आयुक्त (निवृत्त)
ex Sargent Airforce

प्रोप्रा. विशाल नानेश्वर दोरसेटवार

INSURANCE

A A FINANCIAL

DSA

- Medical Insurance Policy
- All General Insurance
- Digit Insurance Company
- Bajaj Insurance Company • HDFC
- Lombart Company • Reliance Insurance Company
- The Chitnavispura Sahakari Bank Limited

इंदोरा, कामठी रोड, नागपूर. M. 8600995809

---

simply success

सचिव-पेरकी जनसंघम, विदर्भ
रमेश रामाजी अंकतवार
LIC अभिकर्ता 1998 से
M. 9890368889
हेल्थ इन्शुरेन्स, जनरल इन्शुरेन्स

LIC

271 राठोड ले आऊट अनंत नगर नागपूर 440013

श्री गजानन ऑनलाइन सेवाओं में आपका स्वागत है।

CSC

बिजली बिल	मनी ट्रांसफर
फोटो कॉपी	आधार कार्ड
वोटर कॉपी	राशन कार्ड
राजपत्र (गॅजेट)	ओबीसी/एसी/एटी सर्टिफिकेट
डोमेसियल सर्टिफिकेट	ड्रायविंग लायसन्स
बायोडाटा (रिझुम)	डिटीएच रिचार्ज
पीएफ निकलवायें	इन्कम सर्टिफिकेट
पेन कार्ड	पोलिस वेरिफिकेशन एफआयआर
प्रिंट आउट	मोबाईल रिचार्ज
ऑनलाईन फार्म फिलींग	पासपोर्ट
ऑल पेमेंट/रोड टॅक्स/चालान	
सर्व प्रकारचे प्रवेश अर्ज	

प्रोप्रा. सुरेश नानेश्वर दोरसेटवार मो. 8208649798, 8329253906

10 नंबर पुलिया कामठी रोड अंडरसहारे कॉम्प्लेक्स समोर नामांतर शहिद स्मारक, नागपूर - 440014.

पेरकी समाज बिजनेस ग्रुप से जुड़े हुए व्यवसायी

BUSINESS PROMOTION GROUP

पुण्य स्मरण

श्री उद्धवराव हणमंतराव गोविंदवार

श्रीमती लक्ष्मीबाई उद्धवराव गोविंदवार

श्री साई लॉज

बस स्टँड जवळ,
अमरावती रोड, यवतमाळ
प्रोप्रा. दिगांबर उ. गोविंदवार

श्री लक्ष्मी नगर ले-आऊट
सावंगी (पेरका), प्राथमिक शाळेजवळ
चिकणा रोड, सावंगी (पेरका)
फार्म हाऊस दिगांबर उद्धवराव
गोविंदवार, सावंगी (पेरका)

मो.नं. 9421958266, 9421884434

पुण्य स्मरण

स्व.श्री दौलतराव
हनुमंतराव गोविंदवार
सावंगी (पेरका)
मृत्यू - अंदाजे 1956

स्व.श्रीमती चंद्राबाई
दौलतराव गोविंदवार
सावंगी (पेरका)
मृत्यू - 16 मे 2003

स्व.श्री श्रीरामजी
तानाजी गुडंकवार
सावंगी (पेरका)
जन्म - 25 मे 1945
मृत्यू - 15 नोव्हेंबर 2018

• पुण्य अनुमोदक •

प्रल्हाद दौलतराव गोविंदवार

सावंगी (पेरका), रालेगांव यवतमाल
हल्ली मुक्काम - मंगेशी सृष्टी, कल्याण (पश्चिम), मुंबई

New

पुण्य स्मरण

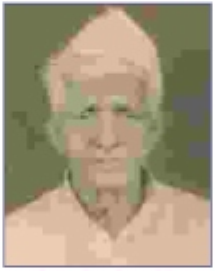

स्व.श्री महादेव डोमा गोविंदवार

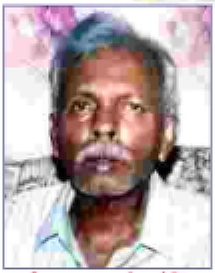

स्व.श्री गणपत महादेव गोविंदवार

स्व.श्रीमती गोविंदवार
मृत्यु : 21/12/23

• पुण्य अनुमोदक •

प्रकाश गणपतराव गोविंदवार आणि परिवार

मिलींद नगर, बालाभाऊपेठ, नागपूर-17.

पुण्य स्मरण

स्व. सहादेव डोमाजी गोविंदवार
मृत्यु : 27 मई 1989

स्व. विठाबाई सहादेव गोविंदवार
मृत्यु : 07 नवम्बर 2011

स्व. दुर्गा शंकरराव गोविंदवार
मृत्यु : 19 मई 2021

• पुण्य अनुमोदक •

श्री शंकरराव सहादेव गोविंदवार

श्री प्रकाश गणपतराव गोविन्दवार आणि परिवार

पताः मकान नंबर 124, खलासी लाईन, लाला का बगीचा, मोहन नगर, नागपुर-440001

New

पुण्य स्मरण

श्री भानुदास चंद्रन्ना जिड्डेवार
मृत्यु दिनांक 5/12/2013

श्रीमती रामक्काबाई भानुदास जिड्डेवार
मृत्यु दिनांक 8/7/2019

सुन्ना गांव पाढ़रकवडा जिला यवतमाल

• पुण्य अनुमोदक •

श्री देवीदास भानुदास जिड्डेवार सेवानिवृत्त वन अधिकारी
नेलको सोसायटी, गोपाल नगर, नागपुर

पुण्य स्मरण

श्री रामदास भानुदास जिड्डेवार

श्री अतुल रामदास जिड्डेवार

• पुण्य अनुमोदक •

संगीता रामदास जिड्डेवार
गांव सुन्ना, तह. पांढरकवडा, जि. यवतमाळ

New

पुण्य स्मरण

श्री रामचन्द्रजी गोपालराव सिंगतवार
ऑफिस : डी आई जी पी टी
279, मोहन नगर, नागपुर

श्री प्रभु गोपालराव सिंगतवार
ऑफिस : डिफेंस नागपुर
279, मोहन नगर, नागपुर

हमारे पिताजी **श्री रामचन्द्रजी गोपालराव सिंगतवार** और काका **श्री प्रभु गोपालराव सिंगतवार** छोटे से बड़े मोहन नगर में हुए। उस समय मोहन नगर पेरकी समाज का गढ़ था। उन्होंने अपनी युवा अवस्था में पेरकी जनसंघम संगठन के लिए काम किया था।

पेरकी जनसंघम के पहले अध्यक्ष श्री पेंटय्याजी दोरसेटवार जी हमारे पिताजी के सगे मामा थे। उस समय मोहन नगर में बड़ी संख्या में पेरकी समाज के लोग रहते थे। पेरकी जनसंघम संगठन में इस बस्ती के लोग ज्यादा सक्रिय थे। पेरकी जनसंघम संगठन में उनका योगदान ज्यादा था। यवतमाल व नांदेड जिल्हों से आने वाले अधिकांश पेरकी हमारे घर अतिथि होते थे!

हमारे पिताश्री और काकाश्री सरकारी नौकरी में थे। हम सभी भाई-बहनों को पढ़ाया। सभी अपने अपने व्यवसाय में सक्रिय हैं। उन्होंने अपना जीवन बहुत ईमानदारी और नेक नीयत से बिताया। आज इस दुनिया में हमारे पिता और काका दोनों नहीं है। हमारे पिताजी और काकाश्री को पुण्य स्मरण करते हुए विनम्र अभिवादन।

भारत सरकार मान्यता

स्वर्णसमृद्धि निधि लिमिटेड

CIN No. : U65990MH2021PLN363932

प्लॉट नं. 96, दुर्गा माता मंदिर, मिलींद नगर, बालाभाऊ पेठ, नागपूर - 440017.

Recurring Deposits Scheme (Monthly Deposits)

Sr. No.	Monthly Deposits Amount	Amount to be Paid on Maturity				
		1 Years	2 Years	3 Years	4 Years	5 Years
1.	500/-	10% 6,325/-	10% 13,250/-	10% 20,775/-	10% 28,900/-	10% 37,625/-
2.	1,000/-	11% 12,715/-	11% 26,750/-	11% 42,105/-	11% 58,780/-	11% 76,775/-
3.	2,000/-	11% 25,430/-	11% 53,500/-	11% 84,210/-	11% 1,17,560/-	11% 1,53,550/-
4.	3,000/-	11% 38,145/-	11% 80,250/-	11% 1,26,315/-	11% 1,76,340/-	11% 2,30,325/-
5.	5,000/-	11% 63,575/-	11% 1,34,375/-	11% 2,11,912/-	11% 2,96,350/-	11% 3,87,688/-
6.	10,000/-	12% 1,27,800/-	12% 2,70,000/-	12% 4,26,600/-	12% 5,97,600/-	12% 7,90,625/-
7.	20,000/-	13% 2,56,900/-	13% 5,45,000/-	13% 8,64,300/-	13% 12,14,800/-	13% 15,96,500/-

Fixed Deposits Scheme

Sr. No.	Period of Deposits	Rate of Interest	
		General	Sr. Citizen
1.	91 Days to 180 Days	3 %	3 %
2.	181 Days to 270 Days	6 %	6 %
3.	271 Days to 12 Months	9 %	9 %
4.	13 Months to 2 Years	12 %	12 %
5.	2 Years to 7 Years	12.5 %	12.5 %

संपर्क

प्रकाश गोविंदवार
(डायरेक्टर)
9096170712

रविकुमार काले
(डायरेक्टर)
8928472234, 7769000116

सौजन्य - विजय हॅन्डलूम, कमाल चौक, नागपूर

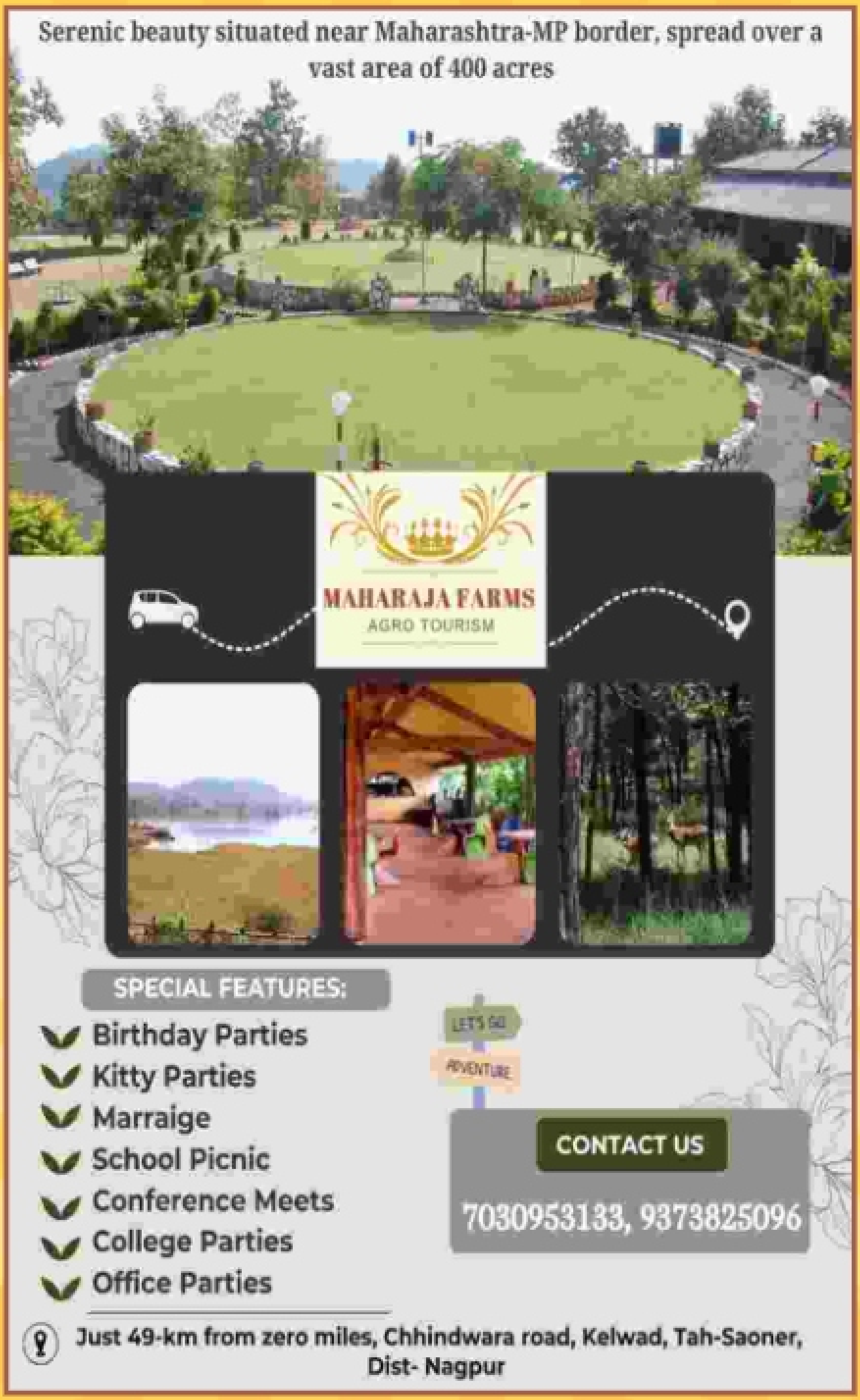
Serenic beauty situated near Maharashtra-MP border, spread over a vast area of 400 acres
MAHARAJA FARMS
AGRO TOURISM
SPECIAL FEATURES:
Birthday Parties
Kitty Parties
Marraige
School Picnic
Conference Meets
College Parties
Office Parties
LET'S GO
ADVENTURE
CONTACT US
7030953133, 9373825096
Just 49-km from zero miles, Chhindwara road, Kelwad, Tah-Saoner, Dist- Nagpur